॥ श्रीहरिः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
1928
त्रिपिण्डीश्राद्धपद्धति
गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR

सुनील शास्त्री बलबेहड़ा
Mob. 94665-43298

सं० २०६९ चतुर्थ पुनर्मुद्रण ५,०००
कुल मुद्रण २०,०००

❖ मूल्य—₹ १५
(पंद्रह रुपये)

प्रकाशक एवं मुद्रक—
गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५
(गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)
फोन : (०५५१) २३३४७२१,२३३१२५०; फैक्स : (०५५१) २३३६९९७
e-mail : **booksales@gitapress.org** website : **www.gitapress.org**

॥ श्रीहरि: ॥

विषय-सूची

Scanned by CamScanner

त्रिपिण्डीश्राद्धविधान

पूर्वोक्त भूत-प्रेतादि इष्टप्रतिबन्धक न होकर कर्ताको सर्वाभीष्ट प्राप्त करानेमें सहायक होते हैं।

ऐसे प्राणी, जो आत्महत्या आदि दुर्मरणसे शरीरका त्याग करते हैं अथवा जिनका शास्त्रोक्त विधिसे और्ध्वदैहिक संस्कार नहीं किया जाता, वे सब भूत-प्रेतादि योनियोंको प्राप्त होते हैं।

नारायणबलि तथा त्रिपिण्डीश्राद्धका उद्देश्य-भेद—जिन जीवोंका दुर्मरण हो जाता है, उनके और्ध्वदैहिकश्राद्धकी सफलताके लिये प्रायश्चित्तरूपमें शास्त्रोंमें नारायणबलि करनेका विधान है। अपने कुलमें अथवा अपनेसे सम्बद्ध किसी अन्य कुलमें उत्पन्न किसी जीवके प्रेतयोनि प्राप्त होनेपर उसके द्वारा अपने वंशमें सन्तानप्राप्तिमें बाधा अथवा अन्य प्रकारके होनेवाले अनिष्टोंकी निवृत्तिके उद्देश्यसे किया जानेवाला श्राद्ध त्रिपिण्डीश्राद्ध कहलाता है। नारायणबलिमें अपने कुल-गोत्रके दुर्मरणग्रस्त जीवका उद्धार हो जाय—यह उद्देश्य होता है, जबकि त्रिपिण्डीश्राद्धमें अपनी वंश-परम्परामें होनेवाले अनिष्टोंकी निवृत्तिके उद्देश्यसे श्राद्ध किया जाता है। नारायणबलि मुख्यरूपसे देवतोद्देश्यक श्राद्ध होता है, जिसमें केवल एक प्रेतका ही श्राद्ध किया जाता है, जबकि त्रिपिण्डीश्राद्धमें सात्त्विक-राजस-तामस प्रेतोंके उद्देश्यसे भी श्राद्ध होता है।

त्रिपिण्डीश्राद्धके लिये प्रशस्त स्थान—त्रिपिण्डीश्राद्धको करनेके लिये काशीमें पिशाचमोचनतीर्थ, गयामें प्रेतशिलातीर्थ तथा अन्यान्य तीर्थस्थल उपयुक्त होते हैं। इसके अतिरिक्त किसी भी पुण्यसलिला नदी अथवा सरोवरके तटपर इसे सम्पन्न किया जा सकता है। यदि ये स्थान सुलभ न हों तो शिवालयके समीपमें, तुलसीवृक्ष अथवा अश्वत्थवृक्षकी सन्निधिमें भी किया जा सकता है।

त्रिपिण्डीश्राद्ध कब करे—यद्यपि कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष और माघ—इन चार महीनोंमें दोनों पक्षोंकी एकादशी, पंचमी, अष्टमी और त्रयोदशी तिथियोंमें श्राद्ध करना चाहिये, किंतु कोई उत्कट कोटिकी बाधा हो रही हो तो मास और तिथिकी अपेक्षा न करके भी यह श्राद्ध किया जा सकता है।

त्रिपिण्डीश्राद्धमें होनेवाले मुख्य कर्म—त्रिपिण्डीश्राद्धमें सम्पन्न होनेवाली जो विशेष प्रक्रिया है, उसका संक्षेपमें यहाँ वर्णन प्रस्तुत है—

त्रिपिण्डीश्राद्धमें मुख्य रूपसे किसी तीर्थमें जाकर सर्वप्रथम श्राद्धमें अधिकारप्राप्तिके निमित्त संकल्पपूर्वक तीर्थमें स्नानकी विधि है। तदनन्तर देव, ऋषि, दिव्यपितृ, स्वपितृ एवं ताताम्बात्रितयादि शास्त्रबोधित पितरोंका तर्पण, सूर्योपस्थान एवं दिङ्नमस्कारका विधान है। इसके पश्चात् शालग्राम अथवा भगवान् विष्णुकी मूर्तिका यथाविधि पूजन किया जाता है। पूजनके अनन्तर श्राद्धका प्रधान प्रतिज्ञासंकल्प होता है। प्रतिज्ञासंकल्प करके विष्णु, ब्रह्मा तथा रुद्रके पूजनके लिये तीन पृथक्-पृथक् कलशोंकी स्थापना, कलशोंका पूजन, तीनों देवोंकी प्रतिमाओंकी अग्न्युत्तारणपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा, कलशोंपर उनका संस्थापन तथा पूजन होता है। तदनन्तर विष्णु, ब्रह्मा तथा रुद्रसूक्तोंका पाठ करनेके लिये तीन ब्राह्मणोंका वरण होता है तथा सूक्तोंका पाठ करते हुए कलशोंका अभिमन्त्रण किया जाता है। सूक्तपाठकर्ता ब्राह्मण संकल्प लेकर सूक्तपाठ करते रहते हैं और श्राद्धकर्ता आचार्यके निर्देशनमें अग्रिम श्राद्धप्रक्रियाका आरम्भ करता है।

तीनों कलशोंके आगे पश्चिमसे पूर्वकी ओर तीन आसन बिछाकर तीनोंपर क्रमशः पितरोंके स्थानपर अज्ञात नाम-

गोत्रवाले द्युलोकनिवासी विष्णुमय सात्त्विक प्रेतोंके लिये विष्णुकलशके सामने, अन्तरिक्षनिवासी ब्रह्ममय राजस प्रेतोंके लिये ब्रह्मकलशके सामने तथा पृथ्वीलोकनिवासी रुद्रमय तामस प्रेतोंके लिये रुद्रकलशके सामने आसनदान होता है। आसनदानके अनन्तर आगे श्राद्ध सम्पन्न होता है। अन्य श्राद्धोंमें पायस (खीर)-का पिण्ड बनता है, किंतु त्रिपिण्डीश्राद्धमें तीनों प्रेतोंके लिये दूसरे द्रव्योंसे पिण्ड बनता है। सात्त्विक प्रेतोंके लिये यव (जौ)-पीठी, राजस प्रेतोंके लिये चावल (तण्डुल)-पीठी तथा तामस प्रेतोंके लिये तिलपीठीका पिण्ड बनता है। इस श्राद्धमें यह एक विशेष बात है कि अक्षय्योदकदानके अनन्तर विशेषार्घ दिया जाता है, जिसमें सात्त्विक प्रेतोंके लिये मातुलिंग (बिजौरा नींबू), राजस प्रेतोंके लिये जम्बीरफल तथा तामस प्रेतोंके लिये खर्जूरके फलके साथ अर्घ दिया जाता है।

श्राद्धके अन्तमें वैदिक-पौराणिक मन्त्रोंद्वारा शंखोदकसे शालग्राम अथवा विष्णुमूर्तिका तर्पण होता है। इसके अनन्तर उसी शंखोदकसे एक तन्त्रसे तीनों पिण्डोंपर तथा प्रेतासनोंमें स्थित दर्भमय सात्त्विक, राजस एवं तामस प्रेतोंका तर्पण किया जाता है। तर्पणकी सांगताप्रतिष्ठाके लिये गोदान होता है। तदनन्तर स्थापित तीनों कलशोंके जलसे पिण्डोंपर अभिषेक होता है। अन्तमें सात्त्विक, राजस तथा तामस प्रेतोंकी श्राद्धप्रतिष्ठासांगताके लिये क्रमशः दक्षिणायुक्त वस्त्रोपवस्त्र, दक्षिणायुक्त मीठे जलसे भरा कमण्डलु और दक्षिणायुक्त उपानह तथा छत्रका दान होता है। इसके पश्चात् मोक्षधेनुदान, तिलपात्रदान तथा आज्यावलोकनपूर्वक छायापात्र (घृतपूर्ण कांस्यपात्र)-का दान किया जाता है और फिर ब्राह्मणत्रयके भोजनका संकल्प करके प्रेतोंका विसर्जन किया जाता है। आचार्य-दक्षिणादानके अन्तमें विष्णुस्मरणपूर्वक प्रार्थना की जाती है और तीर्थाधिपतिका पूजन होता है। अन्तमें पीपलवृक्षके मूलमें तिलमिश्रित जलधारा या दुग्धधारा प्रदानकर श्राद्ध पूर्ण किया जाता है।

प्रमाण-संग्रह

इस पुस्तकमें स्थान-स्थानपर जो प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं, उन प्रमाणोंको यहाँ संगृहीत किया गया है—

(१) उत्तरीय वस्त्रकी अनिवार्यता

स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय, पितृतर्पण, श्राद्ध तथा भोजन आदिमें द्विजको अधोवस्त्र तथा उत्तरीय वस्त्रके रूपमें गमछा आदि अवश्य धारण करना चाहिये—

स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्यात् श्राद्धभोजनसत्क्रियाः॥

(श्राद्धचिन्तामणिमें योगियाज्ञवल्क्यका वचन)

(२) ताताम्बादि पितृ-परिगणन

धर्मशास्त्रोंमें श्राद्ध तथा तर्पणके लिये विभिन्न गोत्रवाले पितरों (ताताम्बादि बान्धवों)-की गणना इस प्रकार की गयी है—

ताताम्बात्रितयं सपत्नजननी मातामहादित्रयम् सस्त्रि स्त्रीतनयादि तातजननीस्वभ्रातरस्तत्स्त्रियः।
ताताम्बाऽऽत्मभगिन्यपत्यधवयुग् जायापिता सद्गुरुः शिष्याप्ताः पितरो महालयविधौ तीर्थे तथा तर्पणे॥

(१) पिता, (२) पितामह (दादा), (३) प्रपितामह (परदादा), (४) माता, (५) पितामही (दादी), (६) प्रपितामही

(परदादी), (७) विमाता (सौतेली माँ), (८) मातामह (नाना), (९) प्रमातामह (परनाना), (१०) वृद्धप्रमातामह (वृद्धपरनाना), (११) मातामही (नानी), (१२) प्रमातामही (परनानी), (१३) वृद्धप्रमातामही (वृद्धपरनानी), (१४) स्त्री (पत्नी), (१५) पुत्र (पुत्री), (१६) चाचा, (१७) चाची, (१८) चाचाका पुत्र (चचेरा भाई), (१९) मामा, (२०) मामी, (२१) मामाका पुत्र (ममेरा भाई), (२२) अपना भाई, (२३) भाभी, (२४) भाईका पुत्र (भतीजा), (२५) फूफा, (२६) फूआ, (२७) फूआका पुत्र, (२८) मौसा (२९) मौसी, (३०) मौसाका पुत्र, (३१) अपनी बहन, (३२) बहनोई, (३३) बहनका पुत्र—भान्जा, (३४) श्वशुर, (३५) सासु, (३६) सद्गुरु, (३७) गुरुपत्नी, (३८) शिष्य, (३९) संरक्षक, (४०) मित्र तथा (४१) भृत्य (सेवक)।

(३) तर्पणसम्बन्धी प्रमाण-वचन

१-देव तथा ऋषि-तर्पणमें दाहिना घुटना जमीनपर लगाकर बैठकर तर्पण करना चाहिये—

दक्षिणजानुभूलग्नो देवेभ्यः सेचयेज्जलम्। (वृद्धपाराशर)।

२-जल तथा अक्षतोंसे तर्पण करना चाहिये—

देवान् ब्रह्मऋषींश्चैव तर्पयेदक्षतोदकैः। (कूर्मपुराण)

३-कुशोंके अग्रभागसे तर्पण करना चाहिये—

कुशाग्रेषु सुरांस्तर्पयेत्। (ब्रह्मपुराण)।

४-एक-एक अंजलि जल देना चाहिये—

एकैकमञ्जलिं देवान्। (व्यास)

५-यदि नदीमें तर्पण किया जाय तो दोनों हाथोंको मिलाकर जलसे भरकर गौकी सींग जितना उठाकर जलमें ही अंजलि दी जाती है—

द्वौ हस्तौ युग्मतः कृत्वा पूरयेदुदकाञ्जलिम्। गोशृङ्गमात्रमुद्धृत्य जलमध्ये जलं क्षिपेत्॥ (उशना)

६-दिव्य मनुष्यतर्पणमें उत्तर दिशाकी ओर मुख करना चाहिये। जनेऊको कण्ठीकी तरह धारण करना चाहिये तथा प्राजापत्यतीर्थसे अंजलि देनी चाहिये—

ततः कृत्वा निवीतं तु यज्ञसूत्रमुदङ्मुखः। प्राजापत्येन तीर्थेन मनुष्यांस्तर्पयेत् पृथक्॥ (विष्णु)

७-दिव्य मनुष्यतर्पणमें कोई भी घुटना जमीनपर नहीं लगाना चाहिये—

मनुष्यतर्पणं कुर्वन्न किञ्चिज्जानु पातयेत्। (पुलस्त्य)

८-सनकादि तर्पणमें दो-दो अंजलियाँ देनी चाहिये—

द्वौ द्वौ तु सनकादयः अर्हन्ति। (व्यास)

९-दिव्य पितृतर्पणमें बायाँ घुटना जमीनपर लगाकर बैठना चाहिये तथा मोटकको तर्जनी और अँगूठेके बीचमें रखकर पितृतीर्थसे तर्पण करना चाहिये—

भूलग्नसव्यजानुश्च दक्षिणाग्रकुशेन च। पितॄन् संतर्पयेत्''''। (वृद्धपराशर)

१०-काले तिलोंसे तर्पण करना चाहिये—

पितॄन् भक्त्या तिलैः कृष्णैः····। (माधव)

११-दिव्य पितरोंको तीन-तीन अंजलि जल देना चाहिये—

अर्हन्ति पितरस्त्रींस्त्रीन्। (व्यास)

१२-यमराजके लिये निम्न नामोंसे प्रत्येकको पितृतीर्थसे दक्षिणाभिमुख तीन-तीन अंजलि जल देना चाहिये—

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च। वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च॥
औदुम्बराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने। वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः॥

(मत्स्यपु० १०२। २३-२४, कात्यायनपरिशिष्ट)

१३-सपत्नीक पित्रादित्रय, सपत्नीक मातामहादित्रयसे अतिरिक्त सभी स्त्री-पुरुषोंको जलकी एक-एक अञ्जलि देनी चाहिये—

····येऽप्यन्ये गोत्रिणो ज्ञातिवर्जिताः। तानेकाञ्जलिदानेन प्रत्येकं च पृथक् पृथक्॥ (व्यासस्मृति ३। २२)

(४) आचमनके अनन्तर भी पवित्रीका त्याग अपेक्षित नहीं

पवित्री धारणकर आचमन करना चाहिये। आचमन करनेसे पवित्री त्याज्य नहीं होती। भोजनके अनन्तर पवित्री जूठी हो जाती है। उसका त्याग कर देना चाहिये—

सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम्। नोच्छिष्टं तत्पवित्रं तु भुक्तोच्छिष्टं तु वर्जयेत्॥

(श्राद्धचिन्तामणिमें मार्कण्डेयका वचन)

(५) दीपककी दिशा

देवोंके निमित्त तथा द्विजके घरमें दीपकका मुख पूर्व या उत्तर और पितरोंके निमित्त दक्षिण करना चाहिये—

प्राङ्मुखोदङ्मुखं दीपं देवागारे द्विजालये। कुर्याद् याम्यमुखं पैत्र्ये अद्भिः संकल्प्य सुस्थिरम्॥

(निर्णयसिन्धु)

(६) नीवीबन्धन

श्राद्धमें रक्षाके लिये पानके पत्ते अथवा किसी पत्रपुटकपर तिल तथा कुशत्रयसे नीवीबन्धन किया जाता है। पितृकार्यमें दक्षिण कटिभागमें तथा देवकार्यमें वाम कटिभागमें नीवीबन्धन होता है—

पितॄणां दक्षिणे पार्श्वे विपरीता तु दैविके। दक्षिणे कटिदेशे तु कुशत्रयतिलैः सह॥
तर्जयन्तीह दैत्यानां यथा नृणामयस्तथा।

(७) श्राद्धमें पितृगायत्रीका पाठ

जिस प्रकार सन्ध्योपासनामें ब्रह्मगायत्रीका त्रिकाल जप आवश्यक है, उसी प्रकार श्राद्धमें पितरोंके गायत्रीमन्त्रका जप आवश्यक है। श्राद्धके प्रारम्भ, मध्य तथा अन्तमें निम्न पितृगायत्रीमन्त्रका तीन बार जप करना चाहिये—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥
आद्यावसाने श्राद्धस्य त्रिरावृत्त्या जपेत् सदा। पिण्डनिर्वपणे वाऽपि जपेदेवं समाहितः॥

(ब्रह्मपु० २२०। १४३-१४४)

(८) सप्तधान्य

(क) जौ, गेहूँ, धान, तिल, टाँगुन, साँवा तथा चना—ये सप्तधान्य कहलाते हैं—

यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्गुस्तथैव च। श्यामाकं चीनकञ्चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्॥

(षट्त्रिंशन्मत)

(ख) मतान्तरसे जौ, धान, तिल, कँगनी, मूँग, चना तथा साँवा—ये सप्तधान्य कहलाते हैं—

यवधान्यतिलाः कङ्गुः मुद्गचणकश्यामकाः। एतानि सप्तधान्यानि सर्वकार्येषु योजयेत्॥

(९) सर्वौषधि

मुरा, जटामाँसी, वच, कुष्ठ, शिलाजीत, हल्दी, दारुहल्दी, सठी, चम्पक और मुस्ता—ये सर्वौषधि कहलाती हैं—

मुरा माँसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्। सठी चम्पकमुस्ता च सर्वौषधिगणः स्मृतः॥

(अग्निपु० १७७। १७)

(१०) पंचपल्लव

बरगद, गूलर, पीपल, आम तथा पाकड़—ये पंचपल्लव कहलाते हैं—

न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चूतप्लक्षस्तथैव च।

(११) सप्तमृत्तिका

घुड़साल, हाथीसाल, बाँबी, नदियोंके संगम, तालाब, राजाके द्वार और गोशाला—इन सात स्थानोंकी मिट्टीको

सप्तमृत्तिका कहते हैं—

अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद्ध्रदात्। राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत्॥

(१२) पंचरत्न

सोना, हीरा, मोती, पद्मराग और नीलम—ये पंचरत्न कहे जाते हैं—

कनकं कुलिशं मुक्ता पद्मरागं च नीलकम्। एतानि पंचरत्नानि सर्वकार्येषु योजयेत्॥

(१३) विभक्तिनिर्णय

अक्षय्योदकदान तथा आसनदानमें षष्ठी, आवाहनमें द्वितीया, अन्नदानमें चतुर्थी विभक्ति तथा शेष स्थलोंपर सम्बोधन बताया गया है—

अक्षय्यासनयोः षष्ठी द्वितीयावाहने तथा। अन्नदाने चतुर्थी स्याच्छेषाः सम्बुद्धयः स्मृताः॥ (निर्णयसिन्धु)

(१४) आसनोंपर आवाहन

पितरों तथा प्रेतका आवाहन आसनोंपर तिल छोड़कर तथा देवताओंका आवाहन आसनोंपर जौ छोड़कर करना चाहिये—

आवाहयेदनुज्ञातो विश्वे देवास इत्यृचा॥
यवैरन्ववकीर्याथ भाजने सपवित्रके।
शन्नो देव्या पयः क्षिप्त्वा यवोऽसीति यवांस्तथा॥

(वीरमित्रोदय, श्रा०प्र०में याज्ञवल्क्यका वचन)

(१५) एकतन्त्रका निषेध

अर्घदान, अक्षय्योदकदान, पिण्डदान, अवनेजनदान, प्रत्यवनेजनदान और स्वधावाचनमें एकतन्त्रकी विधि नहीं है—

अर्घेऽक्षय्योदके चैव पिण्डदानेऽवनेजने। तन्त्रस्य तु निवृत्तिः स्यात् स्वधावाचन एव च॥

(कात्यायनस्मृति २४। १५, वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाश)

(१६) मण्डलकरण

देवताओंके लिये चतुष्कोण और प्रेत तथा पितरोंके लिये वृत्ताकार मण्डल बनाना चाहिये—(क) **दैवे चतुरस्रं पित्र्ये वर्तुलं मण्डलम्।** (निर्णयसिन्धुमें बह्वृचपरिशिष्ट) (ख) देवताओंके लिये दक्षिणावर्त तथा प्रेत एवं पितरोंके लिये वामावर्त मण्डल बनानेकी विधि है—**प्रदक्षिणं तु देवानां पितॄणामप्रदक्षिणम्।** (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें कात्यायनका वचन)

(१७) भोजनपात्रोंसे तिलादिका अपसारण

पितरोंके भोजनपात्रोंसे परोसनेके पूर्व तिल आदिको हटा लेना चाहिये। ऐसा न करनेसे अर्थात् अन्नपात्रोंमें तिल देखकर पितर निराश होकर वापस लौट जाते हैं—

अन्नपात्रे तिलान् दृष्ट्वा निराशाः पितरो गताः॥

(१८) पात्रालम्भन

देवताओंका पात्रालम्भन उत्तान (सीधे) बायें हाथपर उत्तान दाहिना हाथ स्वस्तिकाकार रखकर करना चाहिये तथा

पितरोंका पात्रालम्भन अनुत्तान (उलटे) दाहिने हाथपर अनुत्तान बायें हाथको स्वस्तिकाकार रखकर करना चाहिये—

(क) **पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते।** (यम) **एवमेव हेमाद्रिमदनरत्नप्रभृतयः।**

(ख) **दक्षिणं तु करं कृत्वा वामोपरि निधाय च। देवपात्रमथालभ्य पृथ्वी ते पात्रमुच्चरेत्॥**
दक्षिणोपरि वामञ्च पित्र्यपात्रस्य लम्भनम्। पात्रालम्भनं कुर्याद् दत्त्वा चान्नं यथाविधिः॥

(श्राद्धकाशिकामें पद्मपुराणका वचन)

(१९) अंगुष्ठनिवेशन (अन्नावगाहन)

(क) उत्तान (सीधे) हाथके अँगूठेसे अन्नस्पर्श करनेपर वह श्राद्ध आसुरश्राद्ध हो जाता है और पितरोंको उपलब्ध नहीं होता। इसलिये अनुत्तान हाथके अँगूठेसे अन्न आदिका स्पर्श करना चाहिये—

उत्तानेन तु हस्तेन कुर्यादन्नावगाहनम्। आसुरं तद्भवेच्छ्राद्धं पितॄणां नोपतिष्ठते॥

(ख) जो अज्ञानवश उत्तान हाथसे अंगुष्ठनिवेशन करता है तो वह अन्न राक्षसोंको प्राप्त होता है—

उत्तानेन तु हस्तेन द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम्। यः करोति नरो मोहात् तद्वै रक्षांसि गच्छति॥ (धौम्य)

(२०) विकिरदानकी दिशा

आभ्युदयिक (वृद्धि)-श्राद्धमें पूर्वमें, पार्वणश्राद्धमें नैर्ऋत्यकोणमें, सांवत्सरिकश्राद्धमें अग्निकोणमें तथा प्रेतश्रा[द्धमें] दक्षिण दिशामें विकिरदान करना चाहिये—

आभ्युदयिके तु पूर्वे नैर्ऋत्ये पार्वणे तथा। अग्निकोणे क्षयाहे स्यात् प्रेतश्राद्धे च दक्षिणे॥

(२१) कुशास्तरणसे पूर्व अवनेजन-दानका विधान

कई प्रयोगपद्धतियोंमें कुशास्तरणके बाद अवनेजन प्रदान करनेकी व्यवस्था दी गयी है। परंतु श्राद्धके आधारभूत ग्रन्थ पारस्करगृह्यसूत्र तथा उसके भाष्यकारोंके निम्न वचनोंके अनुसार कुशास्तरणके पूर्व वेदीके मध्य खींची गयी रेखापर अवनेजन देनेका विधान है—

दर्भेषु त्रींस्त्रीन् पिण्डानवनेज्य दद्यात्।

(पारस्करगृह्यसूत्र परिशिष्ट श्राद्धसूत्रकण्डिका ३)

अवनेजन देकर दर्भोंके ऊपर पिण्डदान करे।

उपर्युक्त पारस्करगृह्यसूत्रपर कर्काचार्यजीका भाष्य इस प्रकार है—

पिण्डपितृयज्ञवदुपचार इति सूत्रितत्वात्।

'**पिण्डपितृयज्ञवदुपचारः पित्र्ये**' (श्राद्धकाशिका २।२ तथा पा०गृ०श्राद्धसूत्रकण्डिका २) इस सूत्रके अनुसार पिण्डपितृयज्ञमें जिस प्रक्रियाका आश्रयण किया गया है, उसी तरह अन्य श्राद्धोंमें भी किया जाय। दर्शपौर्णमासमें पितृयज्ञका प्रकरण है, जिसमें पहले अवनेजन करके बादमें कुशास्तरणकी विधि है।

गदाधरभाष्य—**अत्राह याज्ञवल्क्यः—**

सर्वमन्नमुपादाय सतिलं दक्षिणामुखः। उच्छिष्टसन्निधौ पिण्डान् दद्याद्वै पितृयज्ञवदिति॥

अत्र पदार्थक्रमः—उल्लेखनम्, उदकालम्भः, उल्मुकनिधानम्, अवनेजनम्, सकृदाच्छिन्नास्तरणम्, पिण्डदानम्।

अर्थात् उच्छिष्टकी संनिधिमें दक्षिणाभिमुख होकर सभी अन्नोंको लेकर सतिलपितृयज्ञवत् पिण्ड प्रदान करना चाहिये। यहाँ पदार्थक्रम निम्नलिखित है—(१) उल्लेखन (रेखाकरण), (२) उदकालम्भन, (३) उल्मुकसंस्थापन (अंगारभ्रामण), (४) अवनेजन, (५) कुशास्तरण तथा (६) पिण्डदान।

(२२) ताम्रपात्रस्थ गव्य-विचार

स्नान, तर्पण तथा दानकी क्रियाओंमें ताम्रपात्रपर रखा हुआ दुग्धादि गव्यपदार्थ दूषित नहीं होता—

स्नानतर्पणदानेषु ताम्रे गव्यं न दुष्यति। (हेमाद्रि, प्रायश्चित्तखण्डमें देवलका वचन)

(२३) दीपनिर्वापणकी प्रक्रिया

दीपकको बुझानेसे पुरुषोंकी तथा कूष्माण्डच्छेदनसे स्त्रियोंकी वंशहानि होती है, अतः दीपकको जल आदि अथ[वा] किसी मिट्टीके पात्रसे ढककर बुझाना चाहिये—

दीपनिर्वापणात्पुंसः कूष्माण्डच्छेदनात् स्त्रियाः। वंशहानिः प्रजायेत तस्मान्नैवं समाचरेत्॥

श्राद्धारम्भके पूर्वके कृत्योंकी सामग्री-सूची

(१) तर्पणकी सामग्री—कुशासन या ऊनी कम्बल (बैठनेके लिये), कुश, तिल, तीर्थस्नानके अनन्तर पहननेके लिये धुली हुई धोती तथा उत्तरीय वस्त्र (गमछा आदि), तर्पणके लिये ताँबे अथवा मिट्टीका एक बड़ा पात्र, गंगाजल अथवा शुद्ध जल, चावल (५० ग्राम), जौ (५० ग्राम), काले तिल (५० ग्राम), गन्ध, पुष्प, तुलसीपत्र, अंजलिदानके लिये अर्घपात्र।

(२) पूजनकी सामग्री—घृतयुक्त दीपक, शालग्राम-शिला अथवा भगवान् विष्णुकी स्वर्णादि धातुमयी प्रतिमा, चौकी या पाटा—१, चौकीपर बिछानेके लिये सफेद वस्त्र, मूर्तिस्थापनके लिये सिंहासन, गंगाजल अथवा शुद्ध जल, पंचामृत एक कटोरी (दूध, दही, घी, मधु, देशी शक्कर), वस्त्र-उपवस्त्र (चढ़ानेके लिये), यज्ञोपवीत—एक जोड़ा, रोरी, अक्षत (श्वेत तिल), चन्दन सफेद घिसा हुआ, पुष्प-पुष्पमाला, तुलसीपत्र, धूप, दीपके लिये घृताक्त रूईकी बत्ती, कपूर, दियासलाई, नैवेद्य (पेड़ा, मिसरी आदि), ऋतुफल, पान-सुपारी, लौंग, इलायची, द्रव्य-दक्षिणा, पलाशके पत्तल, दोनिये या मिट्टीके कसोरे, पूजन-सामग्री रखनेके लिये थाली तथा पूजाके पात्र—पंचपात्र, आचमनी आदि। जल रखनेके लिये जलपात्र।

त्रिपिण्डीश्राद्धारम्भके पूर्वके कृत्य

(क) स्नान एवं तर्पणविधि

किसी तीर्थ अथवा काशीके पिशाचमोचनतीर्थमें जाकर सर्वप्रथम संकल्पपूर्वक सविधि स्नान अथवा मार्जनस्नान करना चाहिये।

स्नानसंकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः पुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य अचिन्त्यशक्तेर्महाविष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते प्रजापतिक्षेत्रे ""स्थाने (काशीमें करना हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने आनन्दवने भगवत्या भागीरथ्या गङ्गायाः पश्चिमे भागे पिशाचमोचनतीर्थे**) **बौद्धावतारे ""संवत्सरे ""अयने ""ऋतौ ""मासे ""पक्षे ""तिथौ ""वासरे एवं ग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं अस्मत्कुले समुत्पन्नानां समुत्पत्स्यमानानां वा विविधविधानां पीडाकारिणां सन्तानपरम्पराप्रतिबन्धकानामपत्यादिहिंसादोषाणां च सम्यक्शान्त्यर्थं करिष्यमाणे त्रिपिण्डीश्राद्धे श्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थं ""तीर्थे स्नानं करिष्ये।** संकल्पजल छोड़ दे।*

तीर्थप्रार्थना—तदनन्तर तीर्थकी प्रार्थना करे और ब्राह्मणोंसे आज्ञा लेकर तीर्थजलमें स्नान करे तथा सफेद धुली

---

* यदि किसी कारणवश कुण्ड आदिमें स्नान करना सम्भव नहीं हो तो मार्जनस्नान कर लेना चाहिये तथा संकल्प भी 'स्नानं करिष्ये' की जगह 'मार्जनस्नानं करिष्ये' बोलना चाहिये।

हुई धोती तथा उत्तरीयके रूपमें कोई गमछा या चादर[1] धारणकर आसनपर पूर्वाभिमुख बैठ जाय। शिखाबन्धन कर ले। दाहिने हाथकी अनामिकामें दो कुशोंकी और बायें हाथकी अनामिकामें तीन कुशोंकी पवित्री धारण कर ले। आचमन कर ले और सर्वप्रथम आचार्यका वरण करे।

आचार्यका वरण-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा वरण-सामग्री लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं करिष्यमाणे पूर्वोत्तराङ्गविशिष्टत्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणि तत्कर्मकारयितृत्वेन ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं आचार्यत्वेन भवन्तं वृणे। कहकर संकल्पजल तथा वरण-सामग्री आचार्यको दे दे। आचार्य '**वृतोऽस्मि**' कहे।

तदनन्तर आचार्यके निर्देशनमें आगेका तर्पण आदि कार्य करे।

तर्पणका संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर तर्पणका संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणत्रिपिण्डीश्राद्धकर्माङ्गतया देवर्षिदिव्यपितॄणां ताताम्बात्रितय-मित्यादिशास्त्रबोधितस्वपितॄणां[2] ये चास्मत्तोऽभिवाञ्छन्ति तेषां च तर्पणं करिष्ये। हाथका जलादि छोड़ दे। फिर निम्न रीतिसे तर्पण करे—

---

१. स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्यात् श्राद्धभोजनसत्क्रियाः॥ (श्राद्धचिन्तामणिमें योगियाज्ञवल्क्यका वचन)
स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय, पितृतर्पण—श्राद्ध तथा भोजन आदिमें द्विजको अधोवस्त्र तथा उत्तरीय वस्त्रके रूपमें गमछा आदि धारण करना चाहिये।

२. धर्मशास्त्रोंमें श्राद्ध तथा तर्पणके लिये विभिन्न गोत्रवाले पितरों (ताताम्बादि बान्धवों)-की गणना इस प्रकार की गयी है—

ताताम्बात्रितयं सपत्नजननी मातामहादित्रयम् सस्त्रि स्त्रीतनयादि तातजननीस्वभ्रातरस्तत्स्त्रियः।
ताताम्बाऽऽत्मभगिन्यपत्यधवयुग् जायापिता सद्गुरुः शिष्याप्ताः पितरो महालयविधौ तीर्थे तथा तर्पणे॥

आवाहन—इसके बाद ताँबे अथवा मिट्टीके पात्रमें जल और चावल डालकर त्रिकुशको पूर्वाग्र रखकर उस पात्रको दायें हाथमें लेकर बायें हाथसे ढककर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर देव-ऋषियोंका आवाहन करे—

ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः सनकादयः। आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः॥

देवतर्पण—देव तथा ऋषि-तर्पणमें—१-पूरब दिशाकी ओर मुँह करे। २-जनेऊको सव्य रखे। ३-दाहिना घुटना जमीनपर लगाकर बैठे।[1] ४-अर्घ्यपात्रमें चावल छोड़े।[2] ५-तीनों कुशोंको पूर्वकी ओर अग्रभाग कर रखे।[3] ६-जलकी अञ्जलि एक-एक हो।[4] ७-देवतीर्थसे अर्थात् दायें हाथकी अँगुलियोंके अग्रभागसे दे। यदि नदीमें तर्पण किया जाय तो दोनों हाथोंको

---

(१) पिता, (२) पितामह (दादा), (३) प्रपितामह (परदादा), (४) माता, (५) पितामही (दादी), (६) प्रपितामही (परदादी), (७) विमाता (सौतेली माँ), (८) मातामह (नाना), (९) प्रमातामह (परनाना), (१०) वृद्धप्रमातामह (वृद्धपरनाना), (११) मातामही (नानी), (१२) प्रमातामही (परनानी), (१३) वृद्धप्रमातामही (वृद्धपरनानी), (१४) स्त्री (पत्नी), (१५) पुत्र (पुत्री), (१६) चाचा, (१७) चाची, (१८) चाचाका पुत्र (चचेरा भाई), (१९) मामा, (२०) मामी, (२१) मामाका पुत्र (ममेरा भाई), (२२) अपना भाई, (२३) भाभी, (२४) भाईका पुत्र (भतीजा), (२५) फूफा, (२६) फूआ, (२७) फूआका पुत्र, (२८) मौसा (२९) मौसी, (३०) मौसाका पुत्र, (३१) अपनी बहन, (३२) बहनोई, (३३) बहनका पुत्र—भान्जा, (३४) श्वशुर, (३५) सासु, (३६) सद्गुरु, (३७) गुरुपत्नी, (३८) शिष्य, (३९) संरक्षक, (४०) मित्र तथा (४१) भृत्य (सेवक)।

१-दक्षिणजानुभूलग्नो देवेभ्यः सेचयेज्जलम्। (वृद्धपाराशर)। २-देवान् ब्रह्मऋषींश्चैव तर्पयेदक्षतोदकैः। (कूर्मपुराण)
३-कुशाग्रेषु सुरांस्तर्पयेत्। (ब्रह्मपुराण)। ४-एकैकमञ्जलिं देवान्। (व्यास)

मिलाकर जलसे भरकर गौकी सींग-जितना ऊँचा उठाकर जलमें ही अञ्जलि डाल दे।*

निम्नलिखित प्रत्येक नाम-मन्त्रके बाद **'तृप्यताम्'** कहकर एक-एक अंजलि जल देता जाय—

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम्।

ऋषितर्पण—इसी प्रकार निम्नलिखित मन्त्रोंसे मरीचि आदि ऋषियोंको भी एक-एक अंजलि जल दे—

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्।

---

* द्वौ हस्तौ युग्मतः कृत्वा पूरयेदुदकाञ्जलिम्। गोशृङ्गमात्रमुद्धृत्य जलमध्ये जलं क्षिपेत्॥ (उशना)

ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

सनकादितर्पण—सनकादितर्पणमें—१. उत्तर दिशाकी ओर मुँह करे।[1] २. जनेऊको कण्ठीकी तरह कर ले। ३. गमछेको भी कण्ठीकी तरह कर ले। ४. सीधा बैठे। कोई घुटना जमीनपर न लगाये।[2] ५. अर्घपात्रमें जौ छोड़े। ६. तीनों कुशोंको उत्तराग्र रखे। ७. प्राजापत्य (काय) तीर्थसे अर्थात् कुशोंको दाहिने हाथकी कनिष्ठिकाके मूलभागमें रखकर यहींसे जल दे। ८. दो-दो अंजलियाँ जल दे।[3]
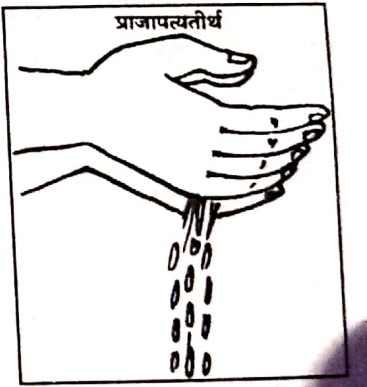
ॐ सनकस्तृप्यताम् (२)। ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् (२)। ॐ सनातनस्तृप्यताम् (२)। ॐ कपिलस्तृप्यताम् (२)। ॐ आसुरिस्तृप्यताम् (२)। ॐ वोढुस्तृप्यताम् (२)। ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् (२)।

दिव्य पितृतर्पण—दिव्य पितृ-तर्पणमें—१-दक्षिण दिशाकी ओर मुँह करे। २-अपसव्य हो जाय अर्थात् जनेऊको दाहिने कंधेपर रखकर बायें हाथके नीचे ले जाय। ३-गमछेको भी दाहिने कंधेपर रखे। ४-बायाँ घुटना जमीनपर लगाकर बैठे।[4] ५-अर्घ्य-पात्रमें कृष्ण तिल छोड़े।[5] ६-कुशोंको बीचसे मोड़कर उनकी जड़ और अग्रभागको (अर्थात्

१-ततः कृत्वा निवीतं तु यज्ञसूत्रमुदङ्मुखः। प्राजापत्येन तीर्थेन मनुष्यांस्तर्पयेत् पृथक्॥ (विष्णु)
२-मनुष्यतर्पणं कुर्वन्न किञ्चिज्जानु पातयेत्। (पुलस्त्य) ३-द्वौ द्वौ तु सनकादयः अर्हन्ति। (व्यास)
४-भूलग्नसव्यजानुश्च दक्षिणाग्रकुशेन च। पितृन् संतर्पयेत्....। (वृद्धपराशर) ५-पितृन् भक्त्या तिलैः कृष्णैः....। (माधव)

मोटकको) दाहिने हाथमें तर्जनी और अँगूठेके बीचमें रखे। ७-पितृतीर्थ (चित्र पृ०-सं० २७ में देखें)से अर्थात् अँगूठे और तर्जनीके मध्यभागसे अंजलि दे। ८-तीन-तीन अञ्जलियाँ दे।*

उपर्युक्त नियमसे प्रत्येक मन्त्रसे तीन-तीन अञ्जलियोंको देनेके मन्त्र इस प्रकार हैं—

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा।

ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (३)।

ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (३)।

ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (३)।

ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधा (३)।

ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधा (३)।

ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधा (३)।

यम-तर्पण—इसी प्रकार निम्नलिखित प्रत्येक नामसे यमराजको पितृतीर्थसे ही दक्षिणाभिमुख तीन-तीन अञ्जलियाँ दे—

ॐ यमाय नमः (३)। ॐ धर्मराजाय नमः(३)। ॐ मृत्यवे नमः(३)। ॐ अन्तकाय नमः(३)। ॐ

* अर्हन्ति पितरस्त्रींस्त्रीन्। (व्यास)

वैवस्वताय नमः(३)। ॐ कालाय नमः(३)। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः(३)। ॐ औदुम्बराय नमः(३)। ॐ दध्नाय नमः(३)। ॐ नीलाय नमः(३)। ॐ परमेष्ठिने नमः(३)। ॐ वृकोदराय नमः(३)। ॐ चित्राय नमः(३)। ॐ चित्रगुप्ताय नमः(३)।*

पितृतर्पण—पितरोंका तर्पण करनेके पूर्व निम्नांकित मन्त्रसे हाथ जोड़कर प्रथम उनका आवाहन करे—

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु जलाञ्जलिम्।

तदनन्तर निम्न रीतिसे पिता, पितामह आदिको निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए तिलके साथ एक-एक जलांजलि दे, यथा—

१-पिताके लिये अंजलिदान

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥

(यजु० १९।४९)

""गोत्रः अस्मत्पिता ""शर्मा वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा—ऐसा कहकर पिताको पहली अंजलि जल दे।

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वयꣳसुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥

(यजु० १९।५०)

* यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च। वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च॥
औदुम्बराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने। वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः॥ (मत्स्यपु० १०२।२३-२४, कात्यायनपरिशिष्ट)

⋯गोत्रः अस्मत्पिता ⋯शर्मा वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा—ऐसा कहकर पिताको दूसरी अंजलि जल दे।

आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥

(यजु० १९।५८)

⋯गोत्रः अस्मत्पिता ⋯शर्मा वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा—ऐसा कहकर पिताको तीसरी अंजलि जल दे।

२–पितामहके लिये अंजलिदान

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥

(यजु० २।३४)

⋯गोत्रः अस्मत्पितामहः ⋯शर्मा रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा—ऐसा कहकर पितामहको पहली अंजलि जल दे।

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।

(यजु० १९।३६)

⋯गोत्रः अस्मत्पितामहः ⋯शर्मा रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा—ऐसा कहकर पितामहको दूसरी अंजलि जल दे।

ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँ उ च न प्रविद्म। त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञꣳसुकृतं जुषस्व।

(यजु० १९।६७)

⋯गोत्रः अस्मत्पितामहः ⋯शर्मा रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा—ऐसा कहकर पितामहको तीसरी अंजलि जल दे।

३–प्रपितामहके लिये अंजलिदान

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥

(यजु० १३।२७)

⋯गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः ⋯शर्मा आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा—ऐसा कहकर प्रपितामहको पहली अंजलि जल दे।

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥

(यजु० १३।२८)

⋯गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः ⋯शर्मा आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा—ऐसा कहकर प्रपितामहको

दूसरी अंजलि जल दे।

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

(यजु० १३।२९)

""गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः ""शर्मा आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा—ऐसा कहकर प्रपितामहको तीसरी अंजलि जल दे।

तदनन्तर माता, पितामही आदिको तिलके साथ तीन-तीन जलांजलियाँ दे—

४-*माता*—""गोत्रा अस्मन्माता ""देवी गायत्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा।

५-*पितामही*—""गोत्रा अस्मत्पितामही ""देवी सावित्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा।

६-*प्रपितामही*—""गोत्रा अस्मत्प्रपितामही ""देवी सरस्वतीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा।

७-*सौतेली माता*—""गोत्रा अस्मत्सापत्नमाता ""देवी गायत्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा।

द्वितीय गोत्रतर्पण—इसके बाद द्वितीय गोत्रवाले (ननिहालके) मातामह (नाना) आदिका तर्पण करे। यहाँ

भी पहलेकी भाँति नमो वः पितरो० मन्त्र तथा निम्नलिखित वाक्योंको पढ़ते हुए तिलसहित जलकी तीन-तीन अंजलियाँ पितृतीर्थसे दे—

८–मातामह (नाना)

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वासः।

(यजु० २।३२)

""गोत्रः अस्मन्मातामहः ""वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा।

९–प्रमातामह (परनाना)

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वासः।

(यजु० २।३२)

""गोत्रः अस्मत्प्रमातामहः ""रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा।

१०–वृद्धप्रमातामह (वृद्धपरनाना)

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो

घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वासः। (यजु० २। ३२)

""गोत्रः अस्मद् वृद्धप्रमातामहः ""आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा।

११-नानी—""गोत्रा अस्मन्मातामही ""देवी गायत्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा।

१२-परनानी—""गोत्रा अस्मत्प्रमातामही ""देवी सावित्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा।

१३-वृद्धपरनानी—""गोत्रा अस्मद्वृद्धप्रमातामही ""देवी सरस्वतीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा।

पत्न्यादितर्पण—इसके आगे पत्नीसे लेकर आगे परिगणित जो भी सम्बन्धी मृत हो गये हों, उनके गोत्र और नाम लेकर एक-एक अञ्जलि जल दे*—

१. *पत्नी—*ॐ अद्य अस्मत् पत्नी ""देवी इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १।

* ""येऽप्यन्ये गोत्रिणो ज्ञातिवर्जिताः। तानेकाञ्जलिदानेन प्रत्येकं च पृथक् पृथक्॥ (व्याससमृति ३। २२)
सपत्नीक पित्रादित्रय, सपत्नीक मातामहादित्रयसे अतिरिक्त सभी स्त्री-पुरुषोंको एक-एक अञ्जलि देनी चाहिये।

२. *पुत्र—*ॐ अद्य अस्मत् पुत्रः ""शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।

३. *चाचा—*ॐ अद्य अस्मत् पितृव्यः ""शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।

४. *चाची—*ॐ अद्य अस्मत् पितृव्यपत्नी ""देवी इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १।

५. *चाचाका लड़का—*ॐ अद्य अस्मत् पितृव्यपुत्रः ""शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।

६. *मामा—*ॐ अद्य अस्मन्मातुलः ""गोत्रः ""शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।

७. *मामी—*ॐ अद्य अस्मन्मातुलानी ""गोत्रा ""देवी इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १।

८. *ममियाउत भाई—*ॐ अद्य अस्मन्मातुलपुत्रः ""गोत्रः ""शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।

९. *भाई—*ॐ अद्य अस्मद् भ्राता ""शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।

१०. *भाईकी स्त्री—*ॐ अद्य अस्मद् भ्रातृपत्नी ""देवी इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १।

११. *भतीजा—*ॐ अद्य अस्मद् भ्रातृपुत्रः ""शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।

१२. *फूफा—*ॐ अद्य अस्मत् पितृष्वसृपतिः ""गोत्रः ""शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।

१३. *फूआ—*ॐ अद्य अस्मत् पितृष्वसा ""गोत्रा ""देवी इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १।

१४. *फूआका लड़का—*ॐ अद्य अस्मत् पैतृष्वस्रेयः ""गोत्रः ""शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।

१५. *मौसा—*ॐ अद्य अस्मन्मातृष्वसृपतिः ""गोत्रः ""शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।

१६. *मौसी*—ॐ अद्य अस्मन्मातृष्वसा ....गोत्रा ....देवी इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १।
१७. *मौसीया भाई*—ॐ अद्य अस्मन्मातृष्वस्त्रेय: ....गोत्र: ....शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।
१८. *अपनी बहन*—ॐ अद्य अस्मद्भगिनी ....गोत्रा ....देवी इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १।
१९. *बहनोई*—ॐ अद्य अस्मद्भगिनीपति: ....गोत्र: ....शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।
२०. *बहनका लड़का (भांजा)*—ॐ अद्य अस्मद्भागिनेय: ....गोत्र: ....शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।
२१. *श्वशुर*—ॐ अद्य अस्मच्छ्वशुर: ....गोत्र: ....शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।
२२. *सासु*—ॐ अद्य अस्मच्छ्वश्रू: ....गोत्रा ....देवी इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १।
२३. *गुरु*—ॐ अद्य अस्मद् गुरु: ....गोत्र: ....शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।
२४. *मित्र*—ॐ अद्य अस्मन्मित्रम् ....गोत्र: ....शर्मा इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।
२५. *नौकर*—ॐ अद्य अस्मद् भृत्य: ....नामधेय: इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा १।

पुन: **तृप्यध्वम्, तृप्यध्वम्, तृप्यध्वम्**—कहकर तीन अंजलि जल दे।

पश्चात् सव्य-पूर्वाभिमुख हो देवतीर्थसे नीचे लिखा मन्त्र बोलकर जलधारा छोड़े—

देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसा:। पिशाचा गुह्यका: सिद्धा: कूष्माण्डास्तरव: खगा:॥
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तव:। तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिला:॥

इसके बाद अपसव्य होकर जनेऊ और अँगोछेको भी दाहिने कंधेपर रखकर दक्षिणाभिमुख हो जाय। कुशोंको बीचसे मोड़कर इनकी जड़ और अग्रभागको दक्षिणकी ओर कर दे। फिर नीचे लिखे हुए श्लोकोंको पढ़कर पितृतीर्थसे जल गिराये—

नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिता:। तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया॥
येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवा:। ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डा: पुत्रदारविवर्जिता:। तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम्॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवा:। तृप्यन्तु पितर: सर्वे मातृमातामहादय:॥
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्। आब्रह्मभुवनाल्लोँकादिदमस्तु तिलोदकम्॥

वस्त्र-निष्पीडन—इस प्रकार सब पितरोंका तर्पण हो जानेके बाद अँगोछेकी चार तहकर उसमें तिल तथा जल छोड़कर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर जलके बाहर बायीं ओर पृथ्वीपर निचोड़े—

ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृता:। ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

भीष्मतर्पण—इसके बाद भीष्मपितामहको पितृतीर्थ और कुशोंसे जल दे—

वैयाघ्रपदगोत्राय साङ्कृत्यप्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे॥
भीष्म: शान्तनवो वीर: सत्यवादी जितेन्द्रिय:। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्॥

देवताओंका आवाहन-पूजन—सव्य और आचमन करके जलमें गन्ध, अक्षत तथा पुष्प छोड़े और ब्रह्मा,

विष्णु, रुद्र, सविता, मित्र तथा वरुण आदि देवताओंका तत्तत् मन्त्रोंसे ध्यान, आवाहन एवं पूजन करे—

ब्रह्मा—ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि, पूजयामि।

विष्णु—इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ विष्णवे नमः विष्णुं आवाहयामि, पूजयामि।

रुद्र—नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ रुद्राय नमः रुद्रं आवाहयामि, पूजयामि।

सविता—तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ सवित्रे नमः सवितारं आवाहयामि, पूजयामि।

मित्र—मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्॥ मित्राय नमः मित्रं आवाहयामि, पूजयामि।

वरुण—इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके॥ वरुणाय नमः वरुणं आवाहयामि, पूजयामि।

सूर्यको अर्घ्यदान—इसके पश्चात् अर्घ्यमें फूल-चन्दन लेकर निम्नलिखित मन्त्रसे सूर्यको अर्घ्य दे—

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन्! भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये नमस्ते कर्मदायिने॥

तर्पणांग सूर्योपस्थान—सूर्यार्घ्य देकर खड़े होकर हाथ ऊपर उठाकर सूर्यको देखते हुए निम्न मन्त्रोंका पाठ करे—

अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ२ अनु। भ्राजन्तो अग्नयो यथा॥ (यजु० ८।४०)

उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय। सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम्॥ (यजु० ८।४०)

हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥ (यजु० १०।२४)

दिशा एवं दिग्देवताओंका वन्दन—इसके बाद प्रदक्षिणा करके दिशाओं एवं उनके अधिष्ठातृ देवताओंका वन्दन करे—

१-ॐ प्राच्यै नमः, ॐ इन्द्राय नमः। २-ॐ आग्नेय्यै नमः, ॐ अग्नये नमः। ३-ॐ दक्षिणायै नमः, ॐ यमाय नमः। ४-ॐ नैर्ऋत्यै नमः, ॐ निर्ऋतये नमः। ५-ॐ प्रतीच्यै नमः, ॐ वरुणाय नमः। ६-ॐ वायव्यै नमः, ॐ वायवे नमः। ७-ॐ उदीच्यै नमः, ॐ कुबेराय नमः। ८-ॐ ऐशान्यै नमः, ॐ ईशानाय नमः। ९-ॐ ऊर्ध्वायै नमः, ॐ ब्रह्मणे नमः। १०-ॐ अधरायै नमः, ॐ अनन्ताय नमः।

देवताओंको जलांजलि—इस तरह दिशाओं और देवताओंको नमस्कारकर बैठ जाय और नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर देवताओंको एक-एक जलांजलि दे—

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ ओषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

इसके अनन्तर निम्न मन्त्र पढ़कर जलसे मुख धो ले—

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सꣳ शिवेन। त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्॥

विसर्जन—निम्न मन्त्र पढ़ते हुए आवाहित देवताओंका विसर्जन करे—

देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित। मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः॥

समर्पण—निम्नांकित वाक्य पढ़कर यह तर्पणकर्म भगवान्‌को समर्पित करे—

अनेन यथाशक्तिकृतेन त्रिपिण्डीश्राद्धाङ्गभूतदेवर्षिदिव्यपितृस्वपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् पितृस्वरूपी जनार्दनः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

प्रार्थना—तदनन्तर हाथ जोड़कर भगवान्‌का स्मरण करते हुए प्रार्थना करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत् पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ त्रिपिण्डीश्राद्धनिमित्तक तर्पण-विधि पूर्ण हुई॥

(ख) विष्णुपूजन

श्राद्धकर्ममें अधिकारप्राप्तिके लिये भगवान् नारायणकी षोडशोपचार पूजा करनेकी शास्त्रमें विधि है। इसके लिये शालग्रामपर, स्वर्णादि धातुमूर्तिपर अथवा सुपारीपर अथवा तीर्थजलमें विष्णुका पूजन करे।

सर्वप्रथम पुरुषसूक्तके षोडश मन्त्रोंसे अपने अंगोंमें पृथक्-पृथक् न्यास करे, फिर इन्हीं मन्त्रोंसे पूजन करे।

संकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल, द्रव्य लेकर विष्णुपूजन तथा विनियोगका संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ......गोत्रः ......शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं श्रीपरमेश्वरप्रीतिप्राप्तिपूर्वकत्रिपिण्डीश्राद्धाधिकारसिध्यर्थं न्यासपूर्वकयथालब्धोपचारैः विष्णुपूजनं करिष्ये। संकल्पका जल छोड़ दे।

विनियोग—**ॐ सहस्रशीर्षेति षोडशर्चस्य नारायण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः पुरुषो देवता पुरुषसूक्तन्यासे पूजने च विनियोगः।**

अङ्गन्यास—पुरुषसूक्तके षोडश मन्त्रोंके द्वारा निम्न क्रमसे कोष्ठमें लिखे अंगोंका (दाहिने हाथसे) स्पर्श करे—

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिꣳ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ (बायाँ हाथ)

पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ (दाहिना हाथ)

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (बायाँ पैर)

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥ (दाहिना पैर)

इसके अनन्तर निम्न मन्त्र पढ़कर जलसे मुख धो ले—

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सꣳ शिवेन। त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्॥

विसर्जन—निम्न मन्त्र पढ़ते हुए आवाहित देवताओंका विसर्जन करे—

देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित। मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः॥

समर्पण—निम्नांकित वाक्य पढ़कर यह तर्पणकर्म भगवान्‌को समर्पित करे—

अनेन यथाशक्तिकृतेन त्रिपिण्डीश्राद्धाङ्गभूतदेवर्षिदिव्यपितृस्वपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् पितृस्वरूपी जनार्दनः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

प्रार्थना—तदनन्तर हाथ जोड़कर भगवान्‌का स्मरण करते हुए प्रार्थना करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
यत् पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ त्रिपिण्डीश्राद्धनिमित्तक तर्पण-विधि पूर्ण हुई॥

(ख) विष्णुपूजन

श्राद्धकर्ममें अधिकारप्राप्तिके लिये भगवान् नारायणकी षोडशोपचार पूजा करनेकी शास्त्रमें विधि है। इसके लिये शालग्रामपर, स्वर्णादि धातुमूर्तिपर अथवा सुपारीपर अथवा तीर्थजलमें विष्णुका पूजन करे।

सर्वप्रथम पुरुषसूक्तके षोडश मन्त्रोंसे अपने अंगोंमें पृथक्-पृथक् न्यास करे, फिर इन्हीं मन्त्रोंसे पूजन करे।

संकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल, द्रव्य लेकर विष्णुपूजन तथा विनियोगका संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं श्रीपरमेश्वरप्रीतिप्राप्तिपूर्वकत्रिपिण्डीश्राद्धाधिकारसिध्यर्थं न्यासपूर्वकयथालब्धोपचारैः विष्णुपूजनं करिष्ये। संकल्पका जल छोड़ दे।

विनियोग—**ॐ सहस्रशीर्षेति षोडशर्चस्य नारायण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः पुरुषो देवता पुरुषसूक्तन्यासे पूजने च विनियोगः।**

अङ्गन्यास—पुरुषसूक्तके षोडश मन्त्रोंके द्वारा निम्न क्रमसे कोष्ठमें लिखे अंगोंका (दाहिने हाथसे) स्पर्श करे—

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिꣳ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ (बायाँ हाथ)
पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ (दाहिना हाथ)
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (बायाँ पैर)
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥ (दाहिना पैर)

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (वाम जानु)
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥ (दक्षिण जानु)
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ (वाम कटिभाग)
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ (दक्षिण कटिभाग)
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ (नाभि)
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ (हृदय)
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत॥ (कण्ठ)
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥ (वाम बाहु)
नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥ (दक्षिण बाहु)
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (मुख)
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥ (दोनों आँख)
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ (सिर)

हृदयादि षडङ्गन्यास

विनियोग—अद्भ्यः इति षडर्चस्योत्तरनारायणऋषिः आद्यानां तिसृणां त्रिष्टुप् छन्दः चतुर्थपञ्चमयोरनुष्टुप् छन्दः षष्ठस्य त्रिष्टुप् छन्दः आदित्यो देवता न्यासे पूजने च विनियोगः।

इस प्रकार विनियोग पढ़कर निम्न रीतिसे हृदय आदि अंगोंका स्पर्श करे—

अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे॥ (हृदयाय नमः)

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥ (शिरसे स्वाहा)

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा वि जायते। तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा॥ (शिखायै वषट्)

यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये॥ (कवचाय हुम्)

रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन् वशे॥ (नेत्रत्रयाय वौषट्)

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ (अस्त्राय फट्)

इस प्रकार अंगन्यास एवं हृदयादि षडंगन्यास करनेके अनन्तर पुरुषसूक्तके मन्त्रोंसे भगवान् विष्णुका षोडशोपचार पूजन करे—

पूजनविधि

ध्यान—

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। (भगवान्के सामने पुष्प रख दे।)

यहाँ वैदिक तथा पौराणिक दोनों मन्त्र दिये जा रहे हैं। दोनों मन्त्र बोलकर पूजा करें अथवा किसी एक मन्त्रके द्वारा भी पूजा कर सकते हैं।

आवाहन *—

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिꣳ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥
(आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत् पूजां करिष्यामि तावत् त्वं सन्निधौ भव॥)
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि। (आवाहनके लिये पुष्प चढ़ाये।)

आसन—

पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
(अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्। भावितं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥)
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि। (आसनके लिये पुष्प चढ़ाये।)

पाद्य—

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
(गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्॥)
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (आचमनीसे जल छोड़े।)

* शालग्राममें भगवान् विष्णुकी नित्य संनिधि रहती है, इसलिये उनका आवाहन नहीं होता, आवाहनके स्थानपर प्रार्थनापूर्वक पुष्प समर्पित करे।

अर्घ्य—

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥
(गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्नो वरदो भव॥)
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (अर्घ्यका जल छोड़े।)

आचमन—

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥
(कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्। तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर॥)
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल समर्पित करे।)

स्नान—

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥
(मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥)
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। स्नानीयं जलं समर्पयामि। (जलसे स्नान कराये।)

स्नानांग-आचमन—श्रीमन्नारायणाय नमः। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (स्नानके बाद आचमनी जल समर्पित करे।)

पंचामृतस्नान—

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

(पयोदधिघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्। पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। (पंचामृतसे स्नान करानेके बाद शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

वस्त्र—

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाᳬसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥

(शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (वस्त्र चढ़ाये, पुनः आचमनीय जल दे।)

यज्ञोपवीत—

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥

(नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (यज्ञोपवीत अर्पण करे, पुनः आचमनीय जल दे।)

उपवस्त्र—

उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (उपवस्त्र चढ़ाये तथा आचमनीय जल समर्पित करे।)

गन्ध—

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥

(श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। चन्दनं समर्पयामि। (मलय चन्दन चढ़ाये)

अक्षत—

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी॥

(अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। अक्षतस्थाने श्वेततिलान् समर्पयामि। (श्वेत तिल चढ़ाये)

पुष्प—

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥

(माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयानीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि। (पुष्प और पुष्पमालाओंसे अलंकृत करे।)

तुलसीपत्र—

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाᳬसुरे स्वाहा॥

(तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्। भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। तुलसीदलं तुलसीमञ्जरीं च समर्पयामि। (तुलसीदल तथा तुलसीमंजरी अर्पित करे।)

धूप—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬं शूद्रो अजायत॥

(वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। धूपमाघ्रापयामि। (धूप आघ्रापित करे।)

दीप—

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥

(साज्यं च वर्तिसंयुक्तम् वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। दीपं दर्शयामि। (दीप दिखाये तथा हाथ धो ले।)

नैवेद्य—नाभ्या आसीदन्तरिक्षᳬं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥

(त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये। गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वर॥)

भगवान्‌के भोगके निमित्त सामने रखे नैवेद्यमें तुलसीदल छोड़कर पाँच ग्रास-मुद्रा दिखाये—

१-ॐ **प्राणाय स्वाहा**—कनिष्ठिका, अनामिका और अँगूठा मिलाये।

२-ॐ **अपानाय स्वाहा**—अनामिका, मध्यमा और अँगूठा मिलाये।

३-ॐ **व्यानाय स्वाहा**—मध्यमा, तर्जनी और अँगूठा मिलाये।

४-ॐ **उदानाय स्वाहा**—तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और अँगूठा मिलाये।

५-ॐ **समानाय स्वाहा**—सब अँगुलियाँ मिलाये।

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि।

(नैवेद्य निवेदित करे तथा पानीय जल अर्पित करे पुनः आचमनीय जल अर्पित करे।)

अखण्ड ऋतुफल—

याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वᳬं हसः॥

(इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। अखण्डऋतुफलं समर्पयामि। (अखण्ड ऋतुफल समर्पित करे।)

ताम्बूल—

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥

(पूगीफलं महद् दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलालवंगसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। एलालवङ्गपूगीफलयुतं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लवंग तथा पूगीफलयुक्त

ताम्बूल अर्पित करे।)

दक्षिणा—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

(दक्षिणा प्रेमसहिता यथाशक्तिसमर्पिता। अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वर॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य-दक्षिणा अर्पित करे।)

आरती-मन्त्र—

ॐ इदꣳ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥

(कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। कर्पूरारार्तिक्यं समर्पयामि। (कर्पूरसे आरती करे)

प्रदक्षिणा—

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥

(यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि। (प्रदक्षिणा करे।)

पुष्पांजलि—

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

(नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर॥)

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (पुष्पांजलि अर्पित करे।)

नमस्कार—

अनादिनिधनो देव शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव॥

पूजनकर्म-समर्पण—अनेन पूजनेन मुक्तिप्रदो श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम् न मम। (बोलकर जल समर्पित करे।)

त्रिपिण्डीश्राद्धविधान

त्रिपिण्डीश्राद्धसामग्री-सूची

बैठनेके लिये कुशासन या ऊनके आसन ६, गंगाजल अथवा शुद्ध जल, रक्षादीपके लिये तिलका तेल १०० ग्राम, कर्मपात्रके लिये छोटा कलश, पीली सरसों १० ग्राम, विष्णु-ब्रह्मा तथा रुद्रके लिये ताम्र अथवा मिट्टीके तीन कलश ढक्कनसहित, सप्तधान्य (जौ, धान, तिल, कंगनी, मूँग, चना, साँवा), सर्वौषधि, पंचपल्लव (बरगद, गूलर, पीपल, आम, पाकड़), सप्तमृत्तिका, सुपारी २०, पंचरत्न (सोना, हीरा, मोती, पद्मराग, नीलम), श्वेत, रक्त तथा कृष्ण वस्त्र एक-एक मीटर, तीन नारियल, श्वेत, रक्त तथा कृष्णवर्णकी तीन पताकाएँ, विष्णुप्रतिमा—स्वर्णकी, ब्रह्मप्रतिमा—रजतकी, रुद्रप्रतिमा—ताम्रकी, आचार्य तथा तीन ब्राह्मणोंके लिये दक्षिणायुक्त वरणसामग्री (धोती, गमछा, चादर आदि), पलाशके पत्तल १५, कुश, दोनिये या हाथके बने मिट्टीके दीये ५०, काले तिल (४०० ग्राम)।

पूजनादि सामग्री—रोरी, जौ २५० ग्राम, चावल १ किलो, चन्दन, वस्त्र, यज्ञोपवीत १५ जोड़ा, उपवस्त्र, मौली, पुष्प-पुष्पमाला १५, तुलसी, कुमकुम, दूर्वा, घी, दूध, पंचामृत, धूप, दीप, नैवेद्य (पेड़ा), ऋतुफल २० (केला छोड़कर), द्रव्यदक्षिणा।

पिण्डदान तथा अन्नपरिवेषण की सामग्री—जौका आटा २५० ग्राम, चावलका आटा २५० ग्राम, तिलका आटा २५० ग्राम।

तीन वेदियोंके लिये बालू या शुद्ध मिट्टी १ किलो, कच्चा सूत, विशेषार्घके लिये ताँबे या मिट्टीके तीन पात्र, मातुलिंग (बिजौरा नींबू)-१ जम्बीरफल (कागजी नीबू)-१, खर्जूर (छुहारा) १०० ग्राम, विष्णुतर्पणके लिये ताँबे या मिट्टीका पात्र-१, अंजलि देनेके लिये शंख-१, गोदानके लिये सवत्सा गौ या निष्क्रयद्रव्य।

दक्षिणा अथवा निष्क्रयद्रव्य—१-सात्त्विक प्रेतोंके निमित्त—दक्षिणाद्रव्ययुक्त वस्त्रोपवस्त्र, २-राजस प्रेतोंके लिये दक्षिणायुक्त मीठे जलसे पूर्ण स्वर्णखण्डयुक्त कमण्डलु, ३-तामस प्रेतोंके लिये दक्षिणायुक्त उपानह तथा छत्र (छाता), तीन मोक्षधेनु या निष्क्रयद्रव्य, स्वर्णखण्ड एवं दक्षिणायुक्त तिलपूर्ण ताम्रपात्र, स्वर्णदक्षिणायुक्त घृतपूर्ण कांस्यपात्र।

ब्राह्मणभोजनसामग्री अथवा निष्क्रयद्रव्य—१-सात्त्विक-ब्राह्मणभोजनके लिये पक्वान्न, २-राजस-ब्राह्मणभोजनके लिये पायस (खीर), ३-तामस-ब्राह्मणभोजनके लिये कृसरान्न (खिचड़ी)।

सूक्तपाठकर्ता ब्राह्मणोंके लिये द्रव्यदक्षिणा, आचार्य-दक्षिणा तथा न्यूनाधिकदोष-परिहारके लिये भूयसी दक्षिणा।
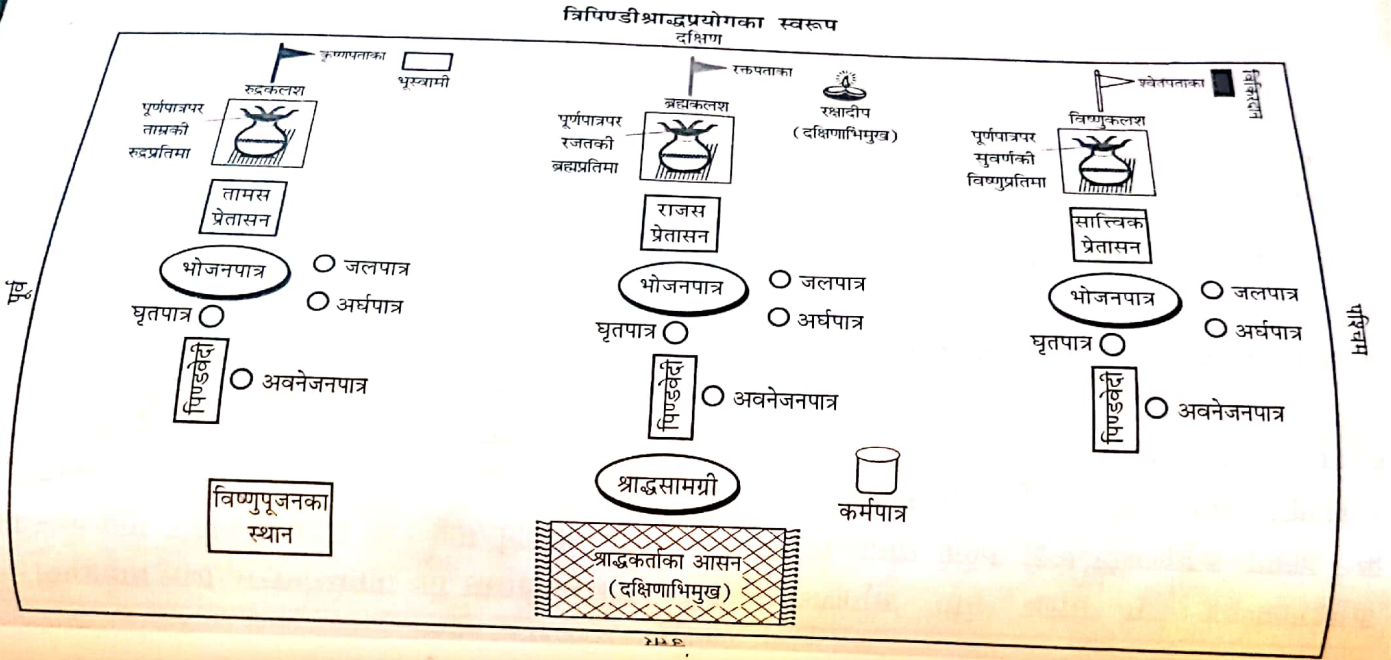
त्रिपिण्डीश्राद्धप्रयोग

विष्णुपूजनके अनन्तर श्राद्धक्रियाका आरम्भ करे। पहलेसे गोबरसे लिपी हुई अथवा धुली हुई श्राद्धभूमिपर आ जाय। सभी श्राद्धीय सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। सर्वप्रथम पिण्डदानादिके लिये पीठीका निर्माण करे।

पिण्डदानादिके लिये पीठीका निर्माण—त्रिपिण्डीश्राद्धमें अन्य श्राद्धोंकी तरह पिण्डदान तथा अन्नपरिवेषण आदिके लिये पाक नहीं बनाया जाता, बल्कि जौ आदिके आटेसे पिण्ड बनता है तथा उसीसे अन्नपरिवेषण भी होता है। अतः सात्त्विक प्रेतोंके लिये जौका आटा, राजस प्रेतोंके लिये चावलका आटा तथा तामस प्रेतोंके लिये पिसा हुआ तिल—इन तीनोंको पृथक्-पृथक् दूध अथवा जलसे गूँथकर पीठीके रूपमें तीन पात्रोंमें अलग-अलग रख दे।

पीठीके निर्माणके अनन्तर हाथ-पैर धोकर श्राद्धस्थलपर कुश या ऊनका आसन बिछाकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाय।

शिखाबन्धन—गायत्रीमन्त्र पढ़कर शिखाबन्धन कर ले।

सिंचन-मार्जन—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्रीधारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

आचमन[1]—**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः**—इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। '**ॐ हृषीकेशाय नमः**' कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम—प्राणायाम करे।

रक्षादीप-प्रज्वालन[2]—श्राद्धभूमिकी दक्षिण दिशामें तिलोंपर रखकर तिलके तेलका एक दक्षिणाभिमुख दीपक जलाकर रख दे। तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

गन्ध, अक्षत, पुष्पसे दीपकका पूजन कर ले। हाथ धोकर आसनपर बैठ जाय।

गदाधर आदिकी प्रार्थना—अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधरका स्मरणकर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्॥

१. सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम्। नोच्छिष्टं तत्पवित्रं तु भुक्तोच्छिष्टं तु वर्जयेत्॥ (*श्राद्धचिन्तामणिमें मार्कण्डेयका वचन*)

२. प्राङ्मुखोदङ्मुखं दीपं देवागारे द्विजालये। कुर्याद् याम्यमुखं पैत्र्ये अद्भिः संकल्प्य सुस्थिरम्॥ (*निर्णयसिन्धु*)
देवोंके निमित्त तथा द्विजके घरमें दीपकका मुख पूर्व या उत्तर और पितरोंके निमित्त दक्षिण करना चाहिये।

ॐ गयायै नमः। ॐ गदाधराय नमः—कहकर फूल चढ़ा दे।

तदनन्तर तीन बार '**ॐ श्राद्धभूम्यै नमः**' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन—श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्का पूजन करनेका विधान है। अतः शालग्रामशिलापर षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजन करना चाहिये। यदि सम्भव न हो तो निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्का स्मरण-पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पित कर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

'**ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः**'—कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण—श्राद्धकर्ममें जलका उपयोग करनेके लिये कर्मपात्रका निर्माण कर ले। अक्षतोंके ऊपर जलसे भरा एक कलश रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि चकृमा वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

प्रोक्षण—कर्मपात्रके जलसे कुशद्वारा अपना तथा सभी श्राद्धसामग्री एवं पिण्डसामग्रीका प्रोक्षण करे और बोले—

'श्वादिदुष्टदृष्टिनिपातदूषितमन्नादिकं पूतं भवतु।'

दिग्-रक्षण—बायें हाथमें पीली सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोले—

नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥

तदनन्तर दाहिने हाथसे सरसोंको पूर्व-दक्षिण आदि दिशाओंमें निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए छोड़े—

पूर्वमें—**प्राच्यै नमः**। दक्षिणमें—**अवाच्यै नमः**। पश्चिममें—**प्रतीच्यै नमः**। उत्तरमें—**उदीच्यै नमः**। आकाशमें—**अन्तरिक्षाय नमः**। भूमिपर—**भूम्यै नमः**।

हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

पूर्वे नारायणः पातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे। प्रद्युम्नः पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः॥

नीवीबन्धन—किसी पत्र-पुटक या पानके पत्तेपर तिल, त्रिकुश लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसे दक्षिण कटिभागमें* खोंस ले, बाँध ले—

* पितॄणां दक्षिणे पार्श्वे विपरीता तु दैविके। दक्षिणे कटिदेशे तु कुशत्रयतिलैः सह। तर्जयन्तीह दैत्यानां यथा नागास्तथा॥

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया।
यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे॥
ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि॥

प्रतिज्ञासंकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर निम्न रीतिसे प्रतिज्ञासंकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः पुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य अचिन्त्यशक्तेर्महाविष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते प्रजापतिक्षेत्रे ....स्थाने (काशीमें करना हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने आनन्दवने भगवत्या भागीरथ्या गङ्गायाः पश्चिमे भागे**) **बौद्धावतारे ....संवत्सरे ....अयने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे एवं ग्रहगण-गुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....शर्मा*/वर्मा/गुप्तोऽहं मत्कुले विविधपीडाकारिणां सन्तानपरम्परावृद्धि-प्रतिबन्धकानां अपत्यादिहिंसापरायणानां अस्मत्कुले प्रभवानामथवा ज्ञाताज्ञातगोत्राणां विप्राणां/क्षत्रियाणां/वैश्यानां/शूद्राणां अनुलोमविलोमजातीयानां निषादजातीनां नीचयोनिगतानां पुंसां/स्त्रीणां भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षस-त्वादिपापयोनिगतानां द्वेषप्रीतिगृहधनादिसम्बन्धेन नानाविधोपद्रवसम्पादकानां नागपिशाचादीनां दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थानां वायुरूपेण संचरणशीलानां विष्णुब्रह्मरुद्रमयानां सात्त्विकराजसतामसानां प्रेतानां प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकोत्तमोत्तमलोकप्राप्त्यर्थं**

* ब्राह्मणको अपने नामके साथ 'शर्मा', क्षत्रियको 'वर्मा' तथा वैश्यको 'गुप्त' जोड़ना चाहिये।

मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं सर्वाबाधाप्रशमनार्थं सर्वाभीष्टसम्प्राप्त्यर्थं च ....तीर्थे दाल्भ्योपदिष्टकल्पेन त्रिपिण्डीश्राद्धं करिष्ये।

संकल्पका जलादि सामने छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ*—पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

तदनन्तर निम्न श्लोकका तीन बार पाठ करे—

सात्त्विकेभ्यो राजसेभ्यस्तामसेभ्यस्तथैव च। विष्णुब्रह्मरुद्रेभ्यश्च नित्यमेव नमो नमः॥

तीन कलशोंका स्थापन

तीन कलशोंकी स्थापना करे। इनका क्रम पश्चिमसे पूर्वकी ओर रहेगा। प्रथम कलश विष्णुकलश, द्वितीय ब्रह्मकल[श] तथा तृतीय रुद्रकलश कहलाता है। तीनों कलशोंकी स्थापना इस प्रकार करे—

भूमिस्पर्श—तीनों कलशोंके लिये भूमिपर चावल या कुमकुमसे तीन अष्टदल कमल पृथक्-पृथक् बनाकर ती[नों] कलशोंको स्थापित की जानेवाली भूमिका स्पर्श निम्न मन्त्रसे करे—

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥

* ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥
आद्यावसाने श्राद्धस्य त्रिरावृत्त्या जपेत् सदा। पिण्डनिर्वपणे वाऽपि जपेदेवं समाहितः॥ (ब्रह्मपु० २२०। १४३-१४४)

धान्य-प्रक्षेप—निम्न मन्त्र पढ़कर भूमिपर सप्तधान्य[1] रखे—

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि॥

कलशोंका स्थापन—निम्न मन्त्र पढ़कर धान्यके ऊपर पृथक्-पृथक् तीनों कलशोंको स्थापित करे—

ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः।
पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः॥

कलशोंमें जल छोड़ना—तीनों कलशोंमें निम्न मन्त्रसे पश्चिम-पूर्व क्रमसे जल छोड़े—

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।

कलशोंमें गन्ध-चन्दन छोड़ना—निम्न मन्त्रसे तीनों कलशोंमें गन्ध छोड़े—

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत॥

कलशोंमें सर्वौषधि[2] छोड़ना—निम्न मन्त्रसे तीनों कलशोंमें सर्वौषधि (अभावमें शतावर) छोड़े—

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च॥

१. (क) यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्कुस्तथैव च। श्यामाकं चीनकञ्चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्॥ (षट्त्रिंशन्मत)
(ख) यवधान्यतिलाः कङ्गुः मुद्गचणकश्यामकाः। एतानि सप्तधान्यानि सर्वकार्येषु योजयेत्॥

२. मुरा माँसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्। सठी चम्पकमुस्ता च सर्वौषधिगणः स्मृतः॥ (अग्निपु० १७७। १७)
मुरा, जटामाँसी, वच, कुष्ठ, शिलाजीत, हल्दी और दारुहल्दी, सठी, चम्पक, मुस्ता—ये सर्वौषधि कहलाती हैं।

कलशोंमें दूर्वाङ्कुर छोड़ना—निम्न मन्त्रसे तीनों कलशोंमें दूब छोड़े—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च॥

कलशोंमें पंचपल्लव[1]—निम्न मन्त्रसे पंचपल्लव छोड़े—

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्॥

कलशोंमें सप्तमृत्तिका[2]—निम्न मन्त्रसे सप्तमृत्तिका छोड़े—

ॐ स्योना पृथिवि नो भवनृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

कलशोंमें सुपारी—निम्न मन्त्रसे सुपारी छोड़े—

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः॥

कलशोंमें पंचरत्न[3]—निम्न मन्त्रसे पंचरत्न छोड़े—

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥

---

१. न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थः चूतप्लक्षस्तथैव च। बरगद, गूलर, पीपल, आम तथा पाकड़—ये पंचपल्लव हैं।

२. अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद्ध्रदात्। राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत्॥ घुड़साल, हाथीसाल, बाँबी, नदियोंके संगम, ताल राजाके द्वार और गोशाला—इन सात स्थानोंकी मिट्टीको सप्तमृत्तिका कहते हैं।

३. कनकं कुलिशं मुक्ता पद्मरागं च नीलकम्। एतानि पञ्चरत्नानि सर्वकार्येषु योजयेत्॥ सोना, हीरा, मोती, पद्मराग और नीलम—ये पञ्चरत्न कहे जाते हैं।

कलशोंमें द्रव्य—निम्न मन्त्रसे कलशोंमें द्रव्य छोड़े—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

कलशोंमें वस्त्र—निम्न मन्त्रसे तीनों कलशोंको युग्म-वस्त्रसे वेष्टित (अलंकृत) करे। क्रमशः विष्णुकलशको श्वेत, ब्रह्मकलशको रक्त तथा रुद्रकलशको कृष्णवस्त्रसे लपेट दे।

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूपꣳ सं व्ययस्व विभावसो॥

कलशोंपर पूर्णपात्र—तीनों कलशोंपर तीन पूर्णपात्र निम्न मन्त्रसे रखे—

ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जꣳ शतक्रतो॥

विष्णुकलशके पूर्णपात्रपर जौ, ब्रह्मकलशके पूर्णपात्रपर चावल तथा रुद्रकलशके पूर्णपात्रपर तिल रखे। तीनों पूर्णपात्रोंके ऊपर क्रमशः श्वेत, रक्त तथा कृष्ण वस्त्रसे वेष्टितकर एक-एक नारियल भी रख दे।

कलशोंमें वरुण देवका ध्यान-आवाहन—हाथमें अक्षत-पुष्प लेकर वरुणदेवका ध्यान तथा आवाहन निम्न मन्त्रसे करे—

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्र मोषीः॥

ॐ अपां पतये वरुणाय नमः—कहकर अक्षत-पुष्प तीनों कलशोंपर छोड़ दे।

कलशोंमें अन्य देवताओंका आवाहन—हाथमें अक्षत-पुष्प लेकर कलशोंमें देवी-देवताओंका आवाहन करे। आवाहनके मन्त्र इस प्रकार हैं—

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥

कलशोंकी प्रतिष्ठा—अक्षत-पुष्प लेकर निम्न मन्त्रसे तीनों कलशोंकी प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु।
विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अक्षत-पुष्प कलशोंके पास छोड़ दे।

तदनन्तर '**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः**' इस मन्त्रसे गन्धाक्षत, पुष्प, धूप-दीप, नैवेद्य आदि उपचारोंद्वा कलशोंका पूजन करे। पूजनके बाद निम्न मन्त्रोंसे प्रार्थना करे—

प्रार्थना—

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव॥
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥

अपां पतये वरुणाय नमः। हाथ जोड़कर नमस्कार करे।

तीन पताकाओंकी स्थापना—तीनों कलशोंके दक्षिण तीन पताकाओंकी भी स्थापना करे। विष्णुकी पताका श्वेतवस्त्रकी, ब्रह्माकी पताका रक्तवस्त्रकी तथा रुद्रकी पताका कृष्णवस्त्रकी होनी चाहिये।

विष्णु, ब्रह्मा एवं रुद्रप्रतिमाओंकी अग्न्युत्तारणपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा—हाथमें जलाक्षत, त्रिकुश लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं आसु मूर्तिषु अवघातादिदोषपरिहारार्थं देवतासान्निध्यर्थञ्च अग्न्युत्तारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये। संकल्पजल छोड़ दे।

विष्णु, ब्रह्मा तथा रुद्रकी स्वर्ण, रजत तथा ताम्रमयी मूर्तियोंको किसी पात्रमें रखकर घीसे उनका लेपन करे और उनके ऊपर दूध तथा जलकी धारा देते हुए निम्न मन्त्रोंका पाठ करे—

ॐ समुद्रस्य त्वाऽवकयाग्ने परि व्ययामसि। पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव॥
ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाऽग्ने परि व्ययामसि। पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव॥

ॐ उप ज्मन्नुप वेतसेऽव तर नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरा गहि।
सेमं नो यज्ञं पावकवर्णꣳ शिवं कृधि॥

ॐ अपामिदं न्ययनꣳ समुद्रस्य निवेशनम्। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव॥

ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षि च॥

ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२ इहा वह। उप यज्ञꣳ हविश्च नः॥

ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच उषसो न भानुना।
तूर्वन् न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः॥

ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे।
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव॥

ॐ नृषदे वेडप्सुषदे वेड् बर्हिषदे वेड् वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट्॥

ॐ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानाꣳ संवत्सरीणमुप भागमासते।
अहुतादो हविषो यज्ञे अस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य॥

ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन् ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य।
येभ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या अधि स्नुषु॥

प्राणप्रतिष्ठा—उन प्रतिमाओंको पंचामृतसे स्नान कराकर किसी दूसरे पात्रमें रख ले और तीनों प्रतिमाओंका दाहिने हाथसे स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्रोंसे एक साथ उनकी प्राणप्रतिष्ठा करे—

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हं सः सोऽहम् आसु विष्णुब्रह्मरुद्रमूर्तिषु प्राणा इह प्राणाः॥

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हं सः सोऽहम् आसु विष्णुब्रह्मरुद्रमूर्तिषु जीव इह स्थितः॥

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हं सः सोऽहम् आसु विष्णुब्रह्मरुद्रमूर्तिषु सर्वाणि इन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु।
विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ध्यान—प्राणप्रतिष्ठाके अनन्तर भगवान्का ध्यान करे—

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव॥

कलशोंपर मूर्तिस्थापन—

प्रथम कलशपर विष्णुमूर्ति-स्थापन—सर्वप्रथम विष्णुकी मूर्तिको उठाकर प्रथम विष्णुकलशके ऊपर रखे हुए पूर्णपात्रपर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए स्थापित करे—

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥

तदनन्तर हाथमें जौ, जल लेकर निम्न मन्त्रसे विष्णुकलशमें सात्त्विक प्रेतका आवाहन करे और जौ, जल कलशमें छोड़ दे—

अज्ञातनामगोत्रं विष्णुमयं सात्त्विकप्रेतं आवाहयामि।

द्वितीय कलशमें ब्रह्ममूर्ति-स्थापन—द्वितीय कलशके ऊपर रखे पूर्णपात्रपर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए ब्रह्माकी रौप्यमयी मूर्ति स्थापित करे—

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥

तदनन्तर हाथमें जौ, जल लेकर निम्न मन्त्रसे ब्रह्मकलशमें राजस प्रेतका आवाहन करे और जौ, जल कलशमें छोड़ दे—

अज्ञातनामगोत्रं ब्रह्ममयं राजसप्रेतं आवाहयामि।

तृतीय कलशमें रुद्रमूर्ति-स्थापन—तृतीय रुद्रकलशके ऊपर रखे हुए पूर्णपात्रपर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए रुद्रकी ताम्रमयी मूर्ति स्थापित करे—

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥

तदनन्तर हाथमें जौ, जल लेकर निम्न मन्त्रसे रुद्रकलशमें तामस प्रेतका आवाहन करे और जौ, जल कलशमें छोड़ दे—

अज्ञातनामगोत्रं रुद्रमयं तामसप्रेतं आवाहयामि।

'विष्णुब्रह्मरुद्रदेवताभ्यो नमः' इस नाममन्त्रसे गन्ध-पुष्पादि उपचारोंसे तीनों देवोंका पूजन करे।

प्रार्थना—पूजनके बाद हाथ जोड़कर निम्न प्रार्थना करे—

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव॥

अतसीपुष्पसङ्काशं पीतवाससमच्युतम्। ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम्॥
कृष्ण कृष्ण कृपालो त्वमगतीनां गतिर्भव। संसारार्णवमग्नानां प्रसीद परमेश्वर॥

सूक्तपाठके लिये तीन ब्राह्मणोंका वरण—पूजनके अनन्तर विष्णुसूक्त, ब्रह्मसूक्त तथा रुद्रसूक्तका पाठ करनेके लिये तीन ब्राह्मणोंका वरण करना चाहिये।

पाठ करनेसे पूर्व तीनों ब्राह्मणोंका पृथक्-पृथक् वरण निम्न संकल्पोंसे करे—

(क) विष्णुसूक्तपाठके लिये ब्राह्मणके वरणका संकल्प—वस्त्र, उपवस्त्र, दक्षिणा तथा वरणसामग्री हाथमें लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं समारब्धेऽस्मिन् त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं विष्णुसूक्तपाठकर्तृत्वेन भवन्तं वृणे।

कहकर सामग्री ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मण **'वृतोऽस्मि'** कहकर वरणसामग्री ग्रहण करे।

(ख) ब्रह्मसूक्तपाठके लिये ब्राह्मणके वरणका संकल्प—वरणसामग्री लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं समारब्धेऽस्मिन् त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मसूक्तपाठकर्तृत्वेन भवन्तं वृणे। कहकर सामग्री ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मण '**वृतोऽस्मि**' कहकर वरणसामग्री ग्रहण करे।

(ग) रुद्रसूक्तपाठके लिये ब्राह्मणवरणका संकल्प—वरणसामग्री लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ···गोत्र ···शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं समारब्धेऽस्मिन् त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ···गोत्रं ···शर्माणं ब्राह्मणं रुद्रसूक्तपाठकर्तृत्वेन भवन्तं वृणे।

कहकर सामग्री ब्राह्मणके हाथमें दे दे। ब्राह्मण '**वृतोऽस्मि**' कहकर वरणसामग्री ग्रहण करे।

तदनन्तर गन्ध, पुष्प आदिके द्वारा वृत ब्राह्मणोंकी पूजा करे।

यदि एक ही ब्राह्मणसे तीनों सूक्तोंका पाठ कराना इष्ट हो तो एक ब्राह्मणका वरण कर लेना चाहिये।

सूक्तपाठके लिये एक ब्राह्मणका वरण-संकल्प—हाथ में त्रिकुश, तिल, जल तथा वरण-सामग्री लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ···गोत्र ···शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं समारब्धेऽस्मिन् त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ···गोत्रं ···शर्माणं ब्राह्मणं विष्णुब्रह्मरुद्रसूक्तपाठकर्तृत्वेन भवन्तं वृणे। कहकर सामग्री ब्राह्मणके हाथमें दे दे। ब्राह्मण '**वृतोऽस्मि**' बोले। गन्ध, पुष्प आदिके द्वारा वृत ब्राह्मणकी पूजा कर ले।

सूक्तपाठकर्ता ब्राह्मण सूक्तोंका पाठ कर लें,* तदनन्तर श्राद्धकर्ता आचार्यके निर्देशनमें आगे बतायी गयी विधिके अनुसार त्रिपिण्डीश्राद्धका कार्य करे।

* तीनों सूक्त—विष्णुसूक्त (यजु० ३१।१—१६), ब्रह्मसूक्त (यजु० २२वाँ अध्याय) तथा रुद्रसूक्त (यजु० १६वाँ अध्याय) पृ० सं० ११४ से

श्राद्धारम्भ

पात्रासादन—प्रत्येक कलशके सामने उसके उत्तरकी ओर एक-एक पत्तल रख ले। तीनों पत्तलोंपर दक्षिणाग्र एक-एक मोटकरूप आसन रख दे। आसनोंपर सात्त्विक, राजस तथा तामस प्रेतोंके प्रतिनिधिके रूपमें एक-एक कुशवटु रख दे। इसी प्रकार तीनों आसनोंके सामने एक-एक भोजनपात्र (पत्तल), भोजनपात्रके पश्चिम एक-एक अर्घपात्र (दोनिया), एक-एक जलपात्र (दोनिया) तथा भोजनपात्रके सामने (उत्तर) एक-एक घृतपात्र (दोनिया) रख दे।

तदनन्तर आसनदानका संकल्प करे—

आसनदानका संकल्प—श्राद्धकर्ता अपने आसनपर बैठ जाय और अपसव्य होकर मोटक, जल तथा जौ लेकर विष्णुमय सात्त्विक प्रेतोंके लिये आसनदानका संकल्प करे—

(क) अज्ञातनामगोत्राणां* सात्त्विकप्रेतानां दिविस्थानां विष्णुमयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमासनं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्—कहकर पहलेसे रखे मोटकरूप प्रथम आसनके ऊपर यव-जलादि छोड़ दे।

पुनः मोटक, जल तथा चावल लेकर ब्रह्ममय राजस प्रेतोंके लिये आसनदानका संकल्प करे—

(ख) अज्ञातनामगोत्राणां राजसप्रेतानां अन्तरिक्षस्थानां ब्रह्ममयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमासनं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्—कहकर पहलेसे रखे मोटकरूप द्वितीय आसनपर संकल्पका चावल-जलादि छोड़ दे।

पुनः हाथमें मोटक, जल तथा तिल लेकर रुद्रमय तामसप्रेतोंके लिये आसनदानका संकल्प करे—

* अक्षय्यासनयोः षष्ठी द्वितीयावाहने तथा। अन्नदाने चतुर्थी च शेषाः सम्बुद्धयः स्मृताः॥ (निर्णयसिन्धु)

(ग) **अज्ञातनामगोत्राणां तामसप्रेतानां भूमिस्थानां रुद्रमयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमासनं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्**—कहकर पहलेसे रखे मोटकरूप तृतीय आसनपर संकल्पका तिल-जलादि छोड़ दे।

आवाहन—प्रथम आसनपर[१] जौ छोड़ते हुए निम्न मन्त्र पढ़कर विष्णुमय सात्त्विक प्रेतोंका आवाहन करे—

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।

द्वितीय आसनपर चावल छोड़ते हुए निम्न मन्त्र पढ़कर ब्रह्ममय राजस प्रेतोंका आवाहन करे—

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी॥

तृतीय आसनपर तिल छोड़ते हुए निम्न मन्त्र पढ़कर रुद्रमय तामसप्रेतोंका आवाहन करे—

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।

तीन अर्घपात्रों[२]का निर्माण—सात्त्विक, राजस तथा तामस प्रेतोंके लिये तीन अर्घपात्रोंका पृथक्-पृथक् निर्माण करे। निम्न मन्त्रको पढ़ते हुए तीनों अर्घपात्रोंमें एक-एक पवित्री दक्षिणाग्र रख दे—

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

---

१. आवाहयेदनुज्ञातो विश्वे देवास इत्यृचा॥
यवैरन्ववकीर्याथ भाजने सपवित्रके। शन्नो देव्या पयः क्षिप्त्वा यवोऽसीति यवांस्तथा॥ (वीरमित्रोदय, श्रा०प्र०में याज्ञवल्क्यका वचन)

२. अर्घदान, अक्षय्योदकदान, पिण्डदान, अवनेजनदान, प्रत्यवनेजनदान और स्वधावाचनमें एकतन्त्रकी विधि नहीं है—
[illegible] तन्त्रस्य तु निवृत्तिः स्यात् स्वधावाचन एव च॥ (कात्यायनस्मृति २४/१५, वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाश)

निम्न मन्त्रसे तीनों अर्घपात्रोंमें जल डालें।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं यो रभिस्रवन्तु नः॥

निम्न मन्त्रसे प्रथम विष्णु-अर्घपात्रपर जौ छोड़े—

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।

निम्न मन्त्रसे द्वितीय ब्रह्माके अर्घपात्रपर चावल छोड़े—

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी॥

निम्न मन्त्रसे तृतीय रुद्रके अर्घपात्रपर तिल छोड़े—

ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः। प्रत्नमद्भिः प्रक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा॥

तदनन्तर तीनों अर्घपात्रोंमें गन्ध, पुष्प तथा तुलसी मौन होकर छोड़े।

प्रथम अर्घपात्रका अभिमन्त्रण—प्रथम विष्णुवाला अर्घपात्र बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथसे उसमेंसे पवित्री निकालकर भोजनपात्रपर उत्तराग्र रख दे और **ॐ नमो नारायणाय** कहकर एक आचमनी जल इस पवित्रकपर छोड़ दे। अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसका अभिमन्त्रण करे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवा शꣳ स्योनाः सुहवा भवन्तु॥

अर्घदानका संकल्प—दाहिने हाथमें मोटक, जौ, जल तथा अर्घपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

(क) **अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एष हस्तार्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्**—कहकर पवित्रक तथा आसनपर अर्घपात्रसे जल गिराकर पवित्री उठाकर अर्घपात्रमें दक्षिणाग्र रख दे और अर्घपात्रको आसनके बायीं ओर उत्तान (सीधा) रख दे। उस समय कहे—**सात्त्विकेभ्यः विष्णुमयेभ्यः प्रेतेभ्यः स्थानमसि।**

द्वितीय अर्घका अभिमन्त्रण—द्वितीय ब्रह्मावाला अर्घपात्र बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथसे उसमेंसे पवित्रक निकालकर भोजनपात्रपर उत्तराग्र रख दे और '**ॐ नमो नारायणाय**' मन्त्रसे एक आचमनी जल उस पवित्रकपर छोड़ दे। अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसका अभिमन्त्रण करे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवा शꣳ स्योनाः सुहवा भवन्तु॥

अर्घदानका संकल्प—दाहिने हाथमें मोटक, चावल, जल तथा दूसरा अर्घपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

(ख) **अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेता अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एष हस्तार्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्**—कहकर पवित्रक तथा आसनपर अर्घपात्रसे जल गिराकर पवित्रीको उठाकर पुनः अर्घपात्रमें दक्षिणाग्र रख दे और अर्घपात्रको आसनके बायीं ओर उत्तान (सीधा) रख दे। उस समय कहे—**राजसेभ्यः ब्रह्ममयेभ्यः प्रेतेभ्यः स्थानमसि।**

तृतीय अर्घका अभिमन्त्रण—तृतीय रुद्रवाला अर्घपात्र बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथसे उसमेंसे पवित्रक निकालकर भोजनपात्रपर उत्तराग्र रख दे और '**ॐ नमो नारायणाय**' मन्त्रसे एक आचमनी जल उस पवित्रकपर छोड़ दे। अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसका अभिमन्त्रण करे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवा शꣳ स्योनाः सुहवा भवन्तु॥

अर्घदानका संकल्प—दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल तथा तीसरा अर्घपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

(ग) **अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेता भूमिस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एष हस्तार्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्**—कहकर पवित्रक तथा आसनपर अर्घपात्रसे जल गिराकर पवित्रीको उठाकर पुनः अर्घपात्रमें दक्षिणाग्र रख दे और अर्घपात्रको आसनके बायीं ओर उत्तान (सीधा) रख दे। उस समय कहे—**तामसेभ्यः रुद्रमयेभ्यः प्रेतेभ्यः स्थानमसि।**

तीनों आसनोंपर पूजन—तीनों आसनोंपर निम्न उपचारोंको चढ़ाते हुए पृथक्-पृथक् पूजन करे। विष्णुमय प्रेतोंके पूजनमें अक्षतके स्थानपर श्वेततिल, ब्रह्ममय प्रेतोंके पूजनमें रक्ततिल (रंगे हुए तिल) तथा रुद्रमय प्रेतोंके पूजनमें कृष्णतिल चढ़ाना चाहिये। सर्वप्रथम विष्णुमय प्रेतोंका निम्न रीतिसे पूजन करे—

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे श्वेततिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर श्वेत तिलाक्षत चढ़ाये। (ब्रह्ममय प्रेतोंके लिये **रक्ततिलाक्षताः** कहे तथा तामस प्रेतोंके लिये **कृष्णतिलाक्षताः** कहे।)

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले।)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

इस प्रकार विष्णु-आसनपर पूजन करके इसी प्रकार ब्रह्माके आसनपर फिर रुद्रके आसनपर पूजन करे।

अर्चनदानका संकल्प—तदनन्तर अर्चनदानोंका पृथक्-पृथक् संकल्प करे।

हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

(क) अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एतान्यर्चनानि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम्—कहकर आसनपर जलादि छोड़ दे।

हाथमें मोटक, चावल, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

(ख) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एतान्यर्चनानि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम्—कहकर आसनपर जलादि छोड़ दे।

हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

(ग) अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः भूमिस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एतान्यर्चनानि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम्—कहकर आसनपर जलादि छोड़ दे।

मण्डलकरण*—विष्णुप्रेतके आसन तथा भोजनपात्रके बायीं ओरसे जलद्वारा चारों ओर एक वर्तुलाका

*देवताओंके लिये चतुष्कोण और प्रेत तथा पितरोंके लिये वृत्ताकार मण्डल बनाना चाहिये— (क) दैवे चतुरस्रं पित्र्ये वर्तुलं मण्डलम्। (निर्णयसिन्धु बह्वृचपरिशिष्ट) (ख) देवताओंके लिये दक्षिणावर्त तथा प्रेत एवं पितरोंके लिये वामावर्त मण्डल बनानेकी विधि है—प्रदक्षिणं तु देवानां पितॄणामप्रदक्षिण (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें कात्यायनका वचन)

(गोलाकार) मण्डल बनाये। इसी प्रकार दूसरे ब्रह्मप्रेतवाले आसन तथा भोजनपात्रके चारों ओर वामावर्त वर्तुलाकार मण्डल बनाये और इसी प्रकार तीसरे रुद्रप्रेतवाले आसन तथा भोजनपात्रके चारों ओर वामावर्त वर्तुलाकार मण्डल बनाये। मण्डलोंको बनाते समय निम्न मन्त्र बोले—

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

भूस्वामीको अन्नप्रदान—दक्षिण दिशाकी भूमिको जलसे सींच दे। तीनों अन्नों (पीठियों)-में पृथक्-पृथक् दूध, घृत तथा मधु मिलाकर एक दोनियेमें उन तीनों अन्नोंको पृथक्-पृथक् रखकर दक्षिण दिशामें रख दे और एक दोनियेमें जल भी रख दे। उस समय निम्न मन्त्र पढ़े—**ॐ इदमन्नं एतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः।**

अन्नपरिवेषण—तीनों भोजनपात्रोंमेंसे पड़े हुए जौ, चावल, तिल आदिको हटाकर पात्रोंको साफ कर ले। तीनों भोजनपात्रोंमेंसे प्रथम सात्त्विक विष्णुप्रेतवाले भोजनपात्रपर पिण्डदानके लिये निर्मित जौकी पीठीसे थोड़ा अन्न निकालकर रखे। द्वितीय राजस ब्रह्मप्रेतवाले भोजनपात्रपर चावलपीठीमेंसे थोड़ा अन्न निकालकर रखे। इसी प्रकार तृतीय तामस रुद्रप्रेतवाले भोजनपात्रपर तिलकी पीठीमेंसे थोड़ा अन्न निकालकर रखे। पूर्वस्थापित तीनों जलपात्रोंमें जल तथा घृतपात्रोंमें घृत भी छोड़ दे। भोजनपात्रोंपर परोसे गये अन्नपर दोनों हाथोंसे निम्न मन्त्र पढ़ते हुए मधु छोड़े—

* अन्नपात्रे तिलान् दृष्ट्वा निराशाः पितरो गताः॥

अन्न परोसनेके पूर्व भोजनपात्रोंसे तिल आदिको हटा लेना चाहिये। ऐसा न करनेसे अर्थात् अन्नपात्रोंमें तिल देखकर पितर निराश होकर वापस लौट जाते हैं।

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

पात्रालम्भन

पात्रालम्भन[1]—अनुत्तान दक्षिण हाथके ऊपर अनुत्तान वाम हाथ स्वस्तिकाकार रखकर प्रथम विष्णुवाले अन्नपात्रका स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र बोले—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

अन्नावगाहन

अन्नावगाहन—बायें हाथसे पहले भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही दाहिने हाथके अनुत्तान[2] अँगूठेसे अन्न छूकर बोले—**इदमन्नम्।**
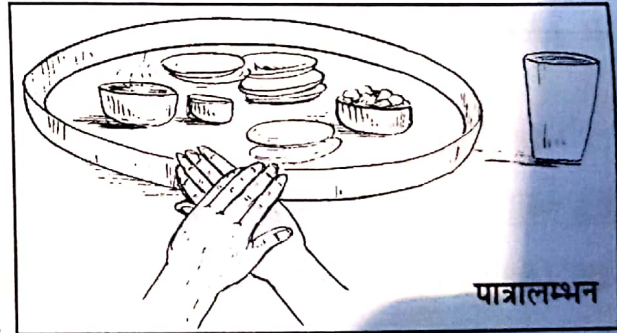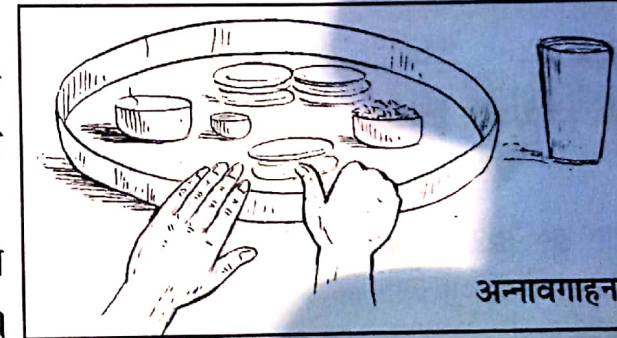
१. (क) पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते। (यम) एवमेव हेमाद्रिमदनरत्नप्रभृतयः।

(ख) दक्षिणोपरि वामं च पित्र्यपात्रस्य लम्भनम्। पात्रालम्भनं कुर्याद् दत्त्वा चान्नं यथाविधिः॥ (श्राद्धकाशिकामें पद्मपुराणका वचन)

२. उत्तानेन तु हस्तेन कुर्यादन्नावगाहनम्। आसुरं तद्भवेच्छ्राद्धं पितृणां नोपतिष्ठते॥ (श्राद्धकाशिका)

उत्तान हाथसे अन्नावगाहन करनेपर वह श्राद्ध आसुर हो जाता है और पितरोंको प्राप्त नहीं होता।

जल छूकर बोले—**इमा आपः।** घी छूकर बोले—**इदमाज्यम्।** पुनः अन्न छूकर बोले—**इदं कव्यम्।**

जौ-विकिरण—बायें हाथसे भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही प्रथम भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर निम्न मन्त्रसे जौ छोड़े—**ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।**

अन्नदानका संकल्प—संकल्पपर्यन्त अन्नपात्रका बायें हाथसे स्पर्श किये रहे। दाहिने हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर संकल्प करे—

(क) अज्ञातनामगोत्रेभ्यः सात्त्विकप्रेतेभ्यः दिविस्थेभ्यः विष्णुमयेभ्यः त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्—कहकर प्रथम भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर जलादिको छोड़ दे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले।

इसी प्रकार राजस एवं तामस प्रेतोंके अन्नपात्रोंपर भी पृथक्-पृथक् आलम्भन, अंगुष्ठनिवेशन (अन्नावगाहन) करे। राजस प्रेतके अन्नपात्रपर **अक्षन्नमी०** मन्त्रसे चावल तथा तामसप्रेतके भोजनपात्रपर **ॐ अपहता०** मन्त्रसे तिल छोड़े तथा पृथक्-पृथक् अन्नदानका संकल्प करे और बादमें बायाँ हाथ हटा ले। दोनोंका संकल्प इस प्रकार है—

दाहिने हाथमें मोटक, चावल, जल लेकर दूसरा संकल्प करे—

(ख) अज्ञातनामगोत्रेभ्यः राजसप्रेतेभ्यः अन्तरिक्षस्थेभ्यः ब्रह्ममयेभ्यः त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्—कहकर द्वितीय भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर जलादिको छोड़ दे। संकल्पके अनन्तर बायाँ

हाथ हटा ले।

दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर तीसरा संकल्प करे—

(ग) अज्ञातनामगोत्रेभ्यः राजसप्रेतेभ्यः भूमिस्थेभ्यः रुद्रमयेभ्यः त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्—कहकर तृतीय भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर जलादिको छोड़ दे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले।

तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्। अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः॥

पितृगायत्रीका पाठ—हाथ-पैर धो ले, पूर्व दिशामें मुख करके बैठ जाय, सव्य होकर निम्न पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

वेद-शास्त्रादिका पाठ—तदनन्तर यथासम्भव वेद-शास्त्रादिका भी पाठ करे। पैरोंके नीचे पूर्वाग्र तीन कुश रखकर निम्नलिखित वेदशास्त्रादिका पाठ करे। यथासम्भव रक्षोघ्नसूक्त, पुरुषसूक्त, पितृसूक्त* आदिका पाठ करना चाहिये।

श्रुतिपाठ—**ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥**

---

१. ये सूक्त पृष्ठसंख्या १२७ तथा १२८ में दिये गये हैं।

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥

ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥

स्मृतिपाठ—

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः। प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन्॥
योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं सम्पूज्य मुनयोऽब्रुवन्। वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषतः॥
मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः। यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती॥
पराशरव्यासशङ्खलिखिता दक्षगौतमौ। शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः॥

पुराण—

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥
सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ। चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे॥
तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः। प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ॥

महाभारत—

दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखाः।

दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी॥
युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखाः।
माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च॥

विकिरदान*—अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय। दक्षिण दिशाकी भूमिको जलसे सींच दे। उसपर त्रिकुश बिछा दे। तीनों अन्नोंसे थोड़ा-थोड़ा अन्न (पीठी) लेकर पितृतीर्थसे उन्हीं कुशोंपर रख दे। उस समय नि पढ़े—

असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनाम्। उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम्॥
अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥

वेदी-निर्माण—हाथकी पवित्री तथा मोटक उतार दे। हाथ-पैर धोकर सव्य एवं पूर्वाभिमुख होकर हरिस्मरणकर नयी पवित्री धारण कर ले। प्रत्येक भोजनपात्रोंके सामने प्रादेशमात्र (दस अंगुल) लम्बी-चौ वेदी बनाये। वेदी दक्षिणकी ओर ढालवाली होनी चाहिये। तीनों वेदियोंको जलसे सींच दे। उस समय ब

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

रेखाकरण—दायें हाथसे तीनों कुशोंकी जड़ तथा बायें हाथकी तर्जनी एवं अंगुष्ठसे कुशोंके अग्रभागको पकड़कर तीनों वेदियोंपर कुशोंके मूलभागसे उत्तरसे दक्षिणकी ओर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए एक-एक रेखा खींचे—

ॐ अपहता असुरा रक्षाᳬसि वेदिषदः॥

तदनन्तर उन कुशोंको ईशानकोणकी ओर फेंक दे।

उल्मुकस्थापन—तीनों वेदियोंके चारों ओर निम्न मन्त्रसे बायीं ओरसे अंगारका भ्रमण कराये तथा उसे पिण्डवेदीके दक्षिणकी ओर श्राद्धपर्यन्त स्थापित रखे। इस प्रक्रियाकी सिद्धि अंगार तथा गोहरीके अभावमें ज्वालामुखी धूप आदिसे भी की जा सकती है—

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्॥

अवनेजनपात्रनिर्माण—अवनेजनपात्रके रूपमें एक-एक दोनियेको तीनों वेदियोंकी पश्चिम दिशामें रख ले। तीनों दोनियोंमें पृथक्-पृथक् जल, पुष्प तथा गन्ध छोड़ दे। प्रथम *विष्णुमय अवनेजनपात्रमें* जौ, *द्वितीय ब्रह्ममय* अवनेजनपात्रमें चावल तथा तृतीय रुद्रमय अवनेजनपात्रमें तिल छोड़ दे।

अवनेजनदानका संकल्प*—दाहिने हाथमें मोटक, जौ, जल तथा प्रथम अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प पढ़े—

(क) अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्—ऐसा कहकर प्रथम पश्चिमवाली वेदीकी रेखाके मध्यभागमें आधा जल गिराकर दोनियेको यथास्थान सुरक्षित रख दे।

---

* कई प्रयोगपद्धतियोंमें कुशास्तरणके बाद अवनेजन प्रदान करनेकी व्यवस्था दी गयी है। परंतु श्राद्धके आधारभूत ग्रन्थ पारस्कर-गृह्यसूत्र तथा उसके भाष्यकारोंके निम्न वचनोंके अनुसार कुशास्तरणके पूर्व वेदीके मध्य खींची गयी रेखापर अवनेजन देनेका विधान है—

'दर्भेषु त्रींस्त्रीन् पिण्डानवनेज्य दद्यात्' (पारस्करगृह्यसूत्रपरिशिष्ट श्राद्धसूत्रकण्डिका ३)

अवनेजन देकर दर्भोंके ऊपर पिण्डदान करे।

उपर्युक्त पारस्करगृह्यसूत्रपर कर्काचार्यजीका भाष्य इस प्रकार है—**'पिण्डपितृयज्ञवदुपचार इति सूत्रितत्वात्।'**

'पिण्डपितृयज्ञवदुपचारः पित्र्ये' (श्राद्धकाशिका २। २ तथा पा०गृ० श्राद्धसूत्रकण्डिका २) इस सूत्रके अनुसार पिण्डपितृयज्ञमें जिस प्रक्रियाका आश्रयण किया गया है, उसी तरह अन्य श्राद्धोंमें भी किया जाय। दर्शपौर्णमासमें पितृयज्ञका प्रकरण है, जिसमें पहले अवनेजन करके बादमें कुशास्तरणकी विधि है।

गदाधरभाष्य—अत्राह याज्ञवल्क्यः—सर्वमन्नमुपादाय सतिलं दक्षिणामुखः। उच्छिष्टसन्निधौ पिण्डान् दद्याद्वै पितृयज्ञवत्॥

अत्र पदार्थक्रमः—उल्लेखनम्, उदकालम्भः, उल्मुकनिधानम्, अवनेजनम्, सकृदाच्छिन्नास्तरणम्, पिण्डदानम्।

अर्थात् उच्छिष्टकी सन्निधिमें दक्षिणाभिमुख होकर सभी अन्नोंको लेकर सतिलपितृयज्ञवत् पिण्ड प्रदान करना चाहिये। यहाँ पदार्थक्रम निम्नलिखित है—(१) उल्लेखन (रेखाकरण), (२) उदकालम्भन, (३) उल्मुकसंस्थापन (अंगारभ्रामण), (४) अवनेजन, (५) कुशास्तरण तथा (६) पिण्डदान।

पुनः दाहिने हाथमें मोटक, चावल, जल तथा द्वितीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प पढ़े—

(ख) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्—ऐसा कहकर द्वितीय दोनियेके आधे जलको बीचवाली वेदीकी रेखाके मध्यभागमें गिराकर दोनियेको यथास्थान रख दे।

पुनः दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल तथा तृतीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प पढ़े—

(ग) अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः भूमिस्थाः रुद्रमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्—ऐसा कहकर तृतीय दोनियेके आधे जलको तीसरी वेदीकी रेखाके मध्यभागमें गिराकर दोनियेको यथास्थान सुरक्षित रख दे।

कुशास्तरण*—तीन समूल कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें विभक्तकर प्रत्येक वेदीपर खींची गयी रेखापर दक्षिणाग्र बिछा दे।

पिण्डनिर्माण—बायाँ घुटना मोड़कर जमीनमें टेककर तीन पिण्ड पृथक्-पृथक् बना ले। पहले जौके आटेकी पीठीमें दूध, मधु, घृत तथा शर्करा मिलाकर कपित्थ (कैथ) फलके बराबर एक सात्त्विकप्रेतोद्देश्यक पिण्ड बनाकर पत्तलपर रख ले। हाथ धो ले।

* दर्भग्रहणमिहोपमूलसकृदाच्छिन्नोपलक्षणार्थम्। (पा०गृ०सू०श्राद्धसूत्र कण्डिका ३ में दर्भेषुपर कर्काचार्यजीका भाष्य)

तदनन्तर चावलके आटेकी पीठीमें दूध, मधु, घृत तथा शर्करा मिलाकर कपित्थके बराबर दूसरा राजसप्रेतोद्देश्यक पिण्ड बनाकर उसे भी पत्तलपर रख दे और हाथ धो ले।

इसी प्रकार तिलान्न (तिलपीठी)-में दूध, मधु, घृत तथा शर्करा मिलाकर तीसरा तामसप्रेतोद्देश्यक पिण्ड बनाकर पत्तलपर रख ले तथा हाथ धो ले।

पिण्डदान—हाथमें मोटक, जौ, जल तथा जौकी पीठीसे निर्मित प्रथम पिण्डको लेकर पहले निम्न श्लोकोंका पाठ करे—

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवा मृताः॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। क्रियालोपगताश्चैव जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा॥
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञातकुले मम। धर्मपिण्डो मया दत्तो अक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥
इदं यवमयं पिण्डं यवसर्पिसमन्वितम्। ददामि तस्मै प्रेताय यः पीडां कुरुते मम॥
ये केचित्प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम। यवपिण्डप्रदानेन तृप्तिं गच्छन्तु शाश्वतीम्॥
ये केचिद्दिवि तिष्ठन्ति प्रेताः सात्त्विकरूपिणः। सात्त्विकपिण्डप्रदानेन तृप्तिं गच्छन्तु तेऽक्षयाम्॥

और फिर निम्न संकल्प करे—

(क) अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एष यवमयः पिण्डो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्—ऐसा कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे पहली वेदीके ऊपर अवनेजनस्थानपर कुशोंके ऊपर दोनों

हाथोंसे सँभालकर रख दे।

पुनः हाथमें मोटक, चावल, जल तथा चावलकी पीठीसे निर्मित द्वितीय पिण्डको लेकर निम्न मन्त्रोंका पाठ करे—

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवा मृताः॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। क्रियालोपगताश्चैव जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा॥
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञातकुले मम। धर्मपिण्डो मया दत्तो अक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥
इदं व्रीहिमयं पिण्डं मधुरत्रयसंयुतम्। तन्मुक्तये प्रयच्छामि पीडां ये कुर्वते मम॥
ये केचित्प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम। तण्डुलपिण्डप्रदानेन व्रजन्तु गतिमुत्तमाम्॥
अन्तरिक्षे च ये जाता राजसा वायुरूपिणः। राजसपिण्डप्रदानेन ते तृप्यन्तु मुदान्विताः॥

तदनन्तर निम्न संकल्प करे—

(ख) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेता अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एष व्रीहिमयः पिण्डो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्—कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे दूसरी वेदीके ऊपर अवनेजनस्थानपर कुशोंके ऊपर दोनों हाथोंसे सँभालकर रख दे।

पुनः हाथमें मोटक, तिल, जल तथा तिलपीठीसे निर्मित तृतीय पिण्डको लेकर निम्न मन्त्रोंका पाठ करे—

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवा मृताः॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। क्रियालोपगताश्चैव जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा॥

विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञातकुले मम। धर्मपिण्डो मया दत्तो अक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥
इदं तिलमयं पिण्डं मधुना सर्पिषा युतम्। तेभ्यो ददामि प्रेतेभ्यो ये पीडां कुर्वते सदा॥
ये केचित्तामसाः प्रेता भूमौ तिष्ठन्ति सर्वदा। तिलपिण्डप्रदानेन गतिं गच्छन्तु ते ध्रुवाम्॥
तमोरूपाश्च ये केचिद्वर्तन्ते पितरो मम। पिण्याकपिण्डदानेन ते तृप्यन्तु क्षुधार्दिताः॥

तदनन्तर निम्न संकल्प करे—

(ग) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेता अन्तरिक्षस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एष तिलमयः पिण्डो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्—कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे तीसरी वेदीके ऊपर अवनेजनस्थानपर कुशोंके ऊपर दोनों हाथोंसे सँभालकर रख दे।

हाथ पोंछना—पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले। पूर्वाभिमुख हो जाय, सव्य होकर आचमन करे तथा हाथ जोड़कर भगवान्‌का स्मरण करे।

श्वासनियमन—अपसव्य होकर बैठे हुए ही बायीं ओरसे श्वास खींचते हुए उत्तराभिमुख हो निम्न मन्त्र पढ़े—

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।

तदनन्तर श्वास रोककर दक्षिणाभिमुख होकर पिण्डके पास श्वास छोड़े और यह मन्त्र पढ़े—

अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत।

यही क्रिया दूसरी वेदी तथा तीसरी वेदीपर भी करे।

प्रत्यवनेजनदान—पूर्वमें रखे हुए अवनेजनपात्रोंसे प्रत्यवनेजन दान करे। यदि उनमें जल न बचा हो तो जल छोड़ ले तथा तीनोंके लिये पृथक्-पृथक् निम्न संकल्प करे—

हाथमें मोटक, जौ, जल तथा प्रथम अवनेजनपात्र (दोनिया) लेकर निम्न संकल्प करे—

(क) **अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेता दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्**—कहकर प्रत्यवनेजन जल प्रथम वेदीके पिण्डपर गिरा दे तथा प्रत्यवनेजनपात्र यथास्थान रख दे।

हाथमें मोटक, चावल, जल तथा द्वितीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

(ख) **अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेता अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्**—कहकर प्रत्यवनेजन जल द्वितीय वेदीके पिण्डपर गिरा दे तथा प्रत्यवनेजनपात्र यथास्थान रख दे।

हाथमें मोटक, तिल, जल तथा तृतीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

(ग) **अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेता भूमिस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्**—कहकर प्रत्यवनेजन जल तृतीय वेदीके पिण्डपर गिरा दे तथा प्रत्यवनेजनपात्र यथास्थान रख दे।

नीवीविसर्जन—नीवी निकालकर ईशान कोणकी ओर छोड़ दे। पूर्वाभिमुख तथा सव्य हो जाय। आचमन कर ले।

सूत्रदान—बायें हाथसे सूत्र पकड़कर दाहिने हाथमें लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म। और '**एतद्वः पितरो वासः**' कहकर तीनों पिण्डोंपर पृथक्-पृथक् सूत्र चढ़ाये।

तदनन्तर सूत्रदानका पृथक्-पृथक् संकल्प करे—

हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर सात्त्विक प्रेतोंके लिये निम्न रीतिसे पिण्डके ऊपर सूत्रदानका संकल्प करे—

(क) **अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेता दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एतद्वासः वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्**—कहकर पिण्डके ऊपर संकल्प जल छोड़ दे।

हाथमें मोटक, चावल, जल लेकर राजस प्रेतोंके लिये निम्न रीतिसे पिण्डके ऊपर सूत्रदानका संकल्प करे—

(ख) **अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेता अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एतद्वासः वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्**—कहकर पिण्डके ऊपर संकल्प जल छोड़ दे।

हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर तामस प्रेतोंके लिये निम्न रीतिसे पिण्डके ऊपर सूत्रदानका संकल्प करे—

(ग) **अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेता भूमिस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एतद्वासः वो मया दीयते**

युष्माकमुपतिष्ठताम्—कहकर पिण्डके ऊपर संकल्प जल छोड़ दे।

तीनों पिण्डोंका पूजन—तीनों पिण्डोंका पृथक्-पृथक् पूजन निम्न रीतिसे करे—

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर तीनों पिण्डोंपर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे श्वेततिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर श्वेत तिलाक्षत चढ़ाये। (ब्रह्ममय प्रेतोंके लिये **रक्ततिलाक्षताः** कहे था तामस प्रेतोंके लिये **कृष्णतिलाक्षताः** कहे।)

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले।)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर पहला संकल्प करे—

(क) **अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे एतान्यर्चनानि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम्।** कहकर संकल्प जल सात्त्विक प्रेत-पिण्डपर छोड़ दे।

हाथमें मोटक, चावल, जल लेकर दूसरा संकल्प करे—

(ख) **अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे एतान्यर्चनानि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम्।** कहकर संकल्प जल राजस प्रेत-पिण्डपर छोड़ दे।

हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर तीसरा संकल्प करे—

(ग) **अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः भूमिस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे एतान्यर्चनानि वो मया दीयन्ते**

युष्माकमुपतिष्ठन्ताम्। कहकर संकल्पजल तामस प्रेत-पिण्डपर छोड़ दे।

अक्षय्योदकदान—तीनों भोजनपात्रोंपर पृथक्-पृथक् निम्न मन्त्र बोलते हुए जलादि छोड़े—

ॐ शिवा आपः सन्तु—कहकर तीनोंमें जल छोड़े।

ॐ सौमनस्यमस्तु—कहकर तीनोंमें पुष्प छोड़े।

पहलेमें सफेद फूल, दूसरेमें लाल तथा तीसरेमें नीलवर्णका पुष्प (या अपराजिता) छोड़े।

ॐ अक्षतञ्चारिष्टञ्चास्तु—कहकर प्रथम भोजनपात्रपर जौ, दूसरेपर चावल तथा तीसरेपर तिल छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प—दाहिने हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर पहला संकल्प करे—

(क) **अज्ञातनामगोत्राणां सात्त्विकप्रेतानां दिविस्थानां विष्णुमयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम्।** संकल्पजल प्रथम विष्णुपिण्डपर छोड़ दे।

हाथमें मोटक, चावल, जल लेकर दूसरा संकल्प करे—

(ख) **अज्ञातनामगोत्राणां राजसप्रेतानां अन्तरिक्षस्थानां ब्रह्ममयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम्।** संकल्पजल द्वितीय ब्रह्मपिण्डपर छोड़ दे।

हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर तीसरा संकल्प करे—

(ग) **अज्ञातनामगोत्राणां तामसप्रेतानां भूमिस्थानां रुद्रमयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम्।** संकल्पजल तृतीय रुद्रपिण्डपर छोड़ दे।

विशेषार्घदान

किसी ताम्रपात्र या मिट्टीके पात्रमें जल, गन्ध, जौ, पुष्प तथा मातुलिंग (बिजौरा नींबू) फल रखकर पहला अर्घपात्र बना ले, फिर हाथमें मोटक, जौ, जल तथा अर्घपात्र लेकर पहला संकल्प करे—

(क) **अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे मातुलिङ्गादिभिरर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्।** कहकर संकल्पजल तथा अर्घपात्रस्थजल आदि प्रथम सात्त्विक प्रेतके पिण्डपर चढ़ा दे।

प्रथमके समान ही जल, गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा जम्बीरफल (कागजी नींबू) रखकर दूसरा अर्घपात्र बना ले, फिर हाथमें मोटक, चावल, जल तथा अर्घपात्र लेकर दूसरा संकल्प करे—

(ख) **अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे जम्बीरफलादिभिरर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्।** कहकर संकल्पजल तथा अर्घपात्रस्थजल आदि द्वितीय राजस प्रेतके पिण्डपर चढ़ा दे।

प्रथमके समान ही जल, गन्ध, तिल, पुष्प तथा खर्जूर (छुहारा) रखकर तीसरा अर्घपात्र बना ले, फिर हाथमें मोटक, तिल, जल तथा अर्घपात्र लेकर तीसरा संकल्प करे—

(ग) **अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः भूमिस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे खर्जूरफलादिभिरर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्।** कहकर संकल्पजल तीसरे तामस प्रेतके पिण्डपर चढ़ा दे।

जलधारा—सव्य होकर तीनों पिण्डोंपर निम्न रीतिसे पृथक्-पृथक् पूर्वाग्र जलधारा दे—

युष्माकमुपतिष्ठन्ताम्। कहकर संकल्पजल तामस प्रेत-पिण्डपर छोड़ दे।

अक्षय्योदकदान—तीनों भोजनपात्रोंपर पृथक्-पृथक् निम्न मन्त्र बोलते हुए जलादि छोड़े—

ॐ शिवा आपः सन्तु—कहकर तीनोंमें जल छोड़े।

ॐ सौमनस्यमस्तु—कहकर तीनोंमें पुष्प छोड़े।

पहलेमें सफेद फूल, दूसरेमें लाल तथा तीसरेमें नीलवर्णका पुष्प (या अपराजिता) छोड़े।

ॐ अक्षतञ्चारिष्टञ्चास्तु—कहकर प्रथम भोजनपात्रपर जौ, दूसरेपर चावल तथा तीसरेपर तिल छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प—दाहिने हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर पहला संकल्प करे—

(क) अज्ञातनामगोत्राणां सात्त्विकप्रेतानां दिविस्थानां विष्णुमयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम्। संकल्पजल प्रथम विष्णुपिण्डपर छोड़ दे।

हाथमें मोटक, चावल, जल लेकर दूसरा संकल्प करे—

(ख) अज्ञातनामगोत्राणां राजसप्रेतानां अन्तरिक्षस्थानां ब्रह्ममयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम्। संकल्पजल द्वितीय ब्रह्मपिण्डपर छोड़ दे।

हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर तीसरा संकल्प करे—

(ग) अज्ञातनामगोत्राणां तामसप्रेतानां भूमिस्थानां रुद्रमयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम्। संकल्पजल तृतीय रुद्रपिण्डपर छोड़ दे।

विशेषार्घदान

किसी ताम्रपात्र या मिट्टीके पात्रमें जल, गन्ध, जौ, पुष्प तथा मातुलिंग (बिजौरा नींबू) फल रखकर पहला अर्घपात्र बना ले, फिर हाथमें मोटक, जौ, जल तथा अर्घपात्र लेकर पहला संकल्प करे—

(क) अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे मातुलिङ्गादिभिरर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्। कहकर संकल्पजल तथा अर्घपात्रस्थजल आदि प्रथम सात्त्विक प्रेतके पिण्डपर चढ़ा दे।

प्रथमके समान ही जल, गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा जम्बीरफल (कागजी नींबू) रखकर दूसरा अर्घपात्र बना ले, फिर हाथमें मोटक, चावल, जल तथा अर्घपात्र लेकर दूसरा संकल्प करे—

(ख) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे जम्बीरफलादिभिरर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्। कहकर संकल्पजल तथा अर्घपात्रस्थजल आदि द्वितीय राजस प्रेतके पिण्डपर चढ़ा दे।

प्रथमके समान ही जल, गन्ध, तिल, पुष्प तथा खर्जूर (छुहारा) रखकर तीसरा अर्घपात्र बना ले, फिर हाथमें मोटक, तिल, जल तथा अर्घपात्र लेकर तीसरा संकल्प करे—

(ग) अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः भूमिस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे खर्जूरफलादिभिरर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्। कहकर संकल्पजल तीसरे तामस प्रेतके पिण्डपर चढ़ा दे।

जलधारा—सव्य होकर तीनों पिण्डोंपर निम्न रीतिसे पृथक्-पृथक् पूर्वाग्र जलधारा दे—

प्रथम पिण्डमें जलधारा देते समय—**अघोराः सात्त्विकप्रेताः सन्तु** कहे।

द्वितीय पिण्डमें जलधारा देते समय—**अघोराः राजसप्रेताः सन्तु** कहे।

तृतीय पिण्डमें जलधारा देते समय—**अघोराः तामसप्रेताः सन्तु** कहे।

आशीष-प्रार्थना—पूर्वाभिमुख होकर हाथ जोड़कर निम्न मन्त्र बोलते हुए आशीर्वाद माँगे—

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु॥

ब्राह्मणवाक्य—**सन्त्वेताः सत्या आशिषः।**

पिण्डोंपर जल या दुग्धधारा—अपसव्य होकर प्रत्येक पिण्डके ऊपर दक्षिणाग्र सपवित्रक तीन-तीन कुशोंको रख दे। तदनन्तर दूध या जलसे दक्षिणाग्र पृथक्-पृथक् जलधारा या दुग्धधारा निम्न मन्त्रको पढ़ते हुए दे—

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥

विष्णुतर्पण

सव्य होकर आचमन कर ले, तदनन्तर विष्णुतर्पण करे। शालग्रामकी मूर्तिको किसी पात्रमें स्थापित कर ले। किसी बड़े ताँबे* या मिट्टीके पात्रमें जल, दूध, तिल, जौ, तुलसी, सर्वौषधि, चन्दन, पुष्प तथा फल डाल दे। अंजलिके बीचमें

* स्नानतर्पणदानेषु ताम्रे गव्यं न दुष्यति। (हेमाद्रि प्रायश्चित्तखण्डमें देवलका वचन)

शंख रख ले। उसी शंखमें पूर्वनिर्मित जल लेकर पूर्वाभिमुख होकर देवतीर्थसे शालग्रामशिलापर निम्न मन्त्रोंद्वारा तर्पण करे—

तर्पणके वैदिक मन्त्र—सर्वप्रथम पुरुषसूक्त तथा विष्णुमन्त्रोंसे तर्पण करे तथा मन्त्रके अन्तमें **विष्णुं तर्पयामि** बोले—

(१) ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिꣳ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ विष्णुं तर्पयामि॥

(२) ॐ पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ विष्णुं तर्पयामि॥

(३) ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ विष्णुं तर्पयामि॥

(४) ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥ विष्णुं तर्पयामि॥

(५) ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ विष्णुं तर्पयामि॥

(६) ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥ विष्णुं तर्पयामि॥

(७) ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ विष्णुं तर्पयामि॥

(८) ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ विष्णुं तर्पयामि॥

(९) ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ विष्णुं तर्पयामि॥

(१०) ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ विष्णुं तर्पयामि॥

(११) ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत॥ विष्णुं तर्पयामि॥

(१२) ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥ विष्णुं तर्पयामि॥

(१३) ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥ विष्णुं तर्पयामि॥
(१४) ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ विष्णुं तर्पयामि॥
(१५) ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥ विष्णुं तर्पयामि॥
(१६) ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ विष्णुं तर्पयामि॥
(१७) ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ विष्णुं तर्पयामि॥
(१८) ॐ इरावती धेनुमती हि भूतꣳ सूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते
दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा॥ विष्णुं तर्पयामि॥
(१९) ॐ देवश्रुतौ देवेष्वा घोषतं प्राची प्रेतमध्वरं कल्पयन्ती ऊर्ध्वं यज्ञं नयतं मा जिह्वरतम्।
स्वं गोष्ठमा वदतं देवी दुर्ये आयुर्मा निर्वादिष्टं प्रजां मा निर्वादिष्टमत्र रमेथां वर्ष्मन् पृथिव्याः॥ विष्णुं तर्पयामि॥
(२०) ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजाꣳसि।
यो अस्कभायदुत्तरꣳ सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा॥ विष्णुं तर्पयामि॥
(२१) ॐ दिवो वा विष्ण उत वा पृथिव्या महो वा विष्ण उरोरन्तरिक्षात्।
उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्र यच्छ दक्षिणादोत सव्याद्विष्णवे त्वा॥ विष्णुं तर्पयामि॥

(२२) ॐ प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥ विष्णुं तर्पयामि॥
(२३) ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ विष्णुं तर्पयामि॥

तर्पणके पौराणिक मन्त्र—(१) ॐ विष्णुस्तृप्यतु, (२) ॐ गोविन्दस्तृप्यतु, (३) ॐ केशवस्तृप्यतु, (४) ॐ माधवस्तृप्यतु, (५) ॐ श्रीधरस्तृप्यतु, (६) ॐ हृषीकेशस्तृप्यतु, (७) ॐ पद्मनाभस्तृप्यतु, (८) ॐ पुरुषोत्तमस्तृप्यतु, (९) ॐ अनिरुद्धस्तृप्यतु, (१०) ॐ संकर्षणस्तृप्यतु, (११) ॐ चतुर्भुजस्तृप्यतु, (१२) ॐ पुण्डरीकाक्षस्तृप्यतु, (१३) ॐ मधुसूदनस्तृप्यतु, (१४) ॐ अच्युतस्तृप्यतु, (१५) ॐ जनार्दनस्तृप्यतु, (१६) ॐ अनन्तस्तृप्यतु, (१७) ॐ वैकुण्ठस्तृप्यतु, (१८) ॐ उपेन्द्रस्तृप्यतु, (१९) ॐ त्रिविक्रमस्तृप्यतु, (२०) ॐ गदापाणिस्तृप्यतु, (२१) ॐ श्रीवत्सस्तृप्यतु, (२२) ॐ श्रीकान्तस्तृप्यतु, (२३) ॐ दामोदरस्तृप्यतु, (२४) ॐ वनमाली तृप्यतु, (२५) ॐ नरोत्तमस्तृप्यतु, (२६) ॐ नृसिंहस्तृप्यतु।

यदि सम्भव हो तो विष्णुके अष्टोत्तरसहस्रनामसे भी तर्पण करे।

पुनः निम्न मन्त्रोंसे तर्पण करे—

ॐ अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव॥ विष्णुं तर्पयामि॥
अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतम्। ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम्॥ विष्णुं तर्पयामि॥

कृष्ण कृष्ण कृपालो त्वमगतीनां गतिर्भव। संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम॥ विष्णुं तर्पयामि॥
नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वरप्रद। अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव॥ विष्णुं तर्पयामि॥

पिण्डोंपर तथा दर्भमयी प्रेतप्रतिमाओंपर तर्पण—इस प्रकार विष्णुतर्पण करके अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय। बायाँ घुटना जमीनपर लगा ले। पूर्वनिर्मित शंखके जलसे उसी शंखके द्वारा तीनों पिण्डोंपर तथा चटासनपर विद्यमान सात्त्विक, राजस एवं तामस प्रेतोंकी दर्भमयी प्रतिमाओंपर भी निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए पितृतीर्थसे एकतन्त्रसे जलधारा देते हुए तर्पण करे—

धनलोभमृता ये च गतिर्येषां न विद्यते। ते मे प्रेताः सुखं दद्युस्तेभ्यः दुग्धं तिलोदकम्॥ १॥
कपिलाक्षीरपानेन अगम्यागमनेन च। ते मे प्रेताः सुखं दद्युस्तेभ्यः दुग्धं तिलोदकम्॥ २॥
अपात्रे चैव दानेन प्रेतरूपव्यवस्थिताः। ते मे प्रेताः सुखं दद्युस्तेभ्यः दुग्धं तिलोदकम्॥ ३॥
स्वबन्धुः पितृबन्धुर्वा प्रेतरूपव्यवस्थितः। स मे प्रेतः सुखं दद्यात्तस्मै दुग्धं तिलोदकम्॥ ४॥
पुत्रो वा भ्रातृवर्गो वा प्रेतरूपव्यवस्थितः। स मे प्रेतः सुखं दद्यात्तस्मै दुग्धं तिलोदकम्॥ ५॥
मातृपितृव्यकादिश्च प्रेतभावेन संस्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ ६॥
मातुलानी स्वपत्नी च गोत्रिणः स्वस्य एव च। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ ७॥
पितृवंशे च ये जाता मातृवंशे तथैव च। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ ८॥
नानायोनिगता ये च महास्थलनिवासिनः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ ९॥
ये केचित्प्रेतरूपेण यमेन परिपीडिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ १०॥

ये केचित्प्रेतरूपेण तृषार्त्ताः परिपीडिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ ११॥
महाप्रेता महाभागा प्रपूर्या च समाश्रिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ १२॥
असंख्याता महाघोरा प्रेतरूपैर्व्यवस्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ १३॥
असंख्याता महाप्रेताः शाखान्यग्रोधसंस्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ १४॥
प्रेतलोके च ये जाता मुद्गरैर्बहुखण्डिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ १५॥
ब्राह्मणवृत्तिहरणात् प्रेतरूपव्यवस्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ १६॥
वृत्तिभङ्गकरा ये वै प्रेतरूपव्यवस्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ १७॥
क्रियालोपगता ये च सर्पव्याघ्रहताश्च ये। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ १८॥
ज्वालाग्निभिर्मृता ये च विद्युत्पातादिभिस्तथा। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ १९॥
अपुत्रिणो मृता ये च कुलधर्मविवर्जिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ २०॥
तप्ततैले च निःक्षिप्ता यमलोके महाभये। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ २१॥
किङ्करैः पीडिता ये च सुदृढाः खण्डशः कृताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ २२॥
पापेन पीडिताः कण्ठे यमदूतैर्महाबलैः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ २३॥
सन्दंशैर्घनपातैश्च खण्डिता यमकिङ्करैः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ २४॥
वध्यन्ते बहुभिर्पाशैर्यमदूतैर्महाबलैः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ २५॥

मस्तके मुद्गरैः घोरैः पीडिताः यमकिङ्करैः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ २६॥
यन्त्रमध्ये प्रपीड्यन्ते यमदूतैर्महाबलैः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ २७॥
कुम्भीपाके च निःक्षिप्ता रौरवे च तथैव च। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ २८॥
गुर्वग्निब्राह्मणानां च पादेनैव प्रपीडकाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ २९॥
असिपत्रे खिद्यमाना वृषभीत्या पलायिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम्॥ ३०॥
ब्रह्मस्वहारिणो ये च देवद्रव्यविलुम्पकाः । ते मे प्रेताः सुखं दद्युस्तेभ्यो दुग्धं तिलोदकम्॥ ३१॥

जलधाराका संकल्प—इस प्रकार तर्पण करनेके अनन्तर जलधारा प्रदान करे। दाहिने हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर संकल्प करे—

अज्ञातनामगोत्राणां सात्त्विकराजसतामसप्रेतानां विष्णुब्रह्मरुद्रमयानां दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थानां परलोके महातृषोपशमनार्थं एषा जलधारा वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्। कहकर पितृतीर्थसे संकल्पजल छोड़ दे।

सव्य होकर आचमन कर ले। तदनन्तर गोदान करे।

गोदानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर गोदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृतेऽस्मिन् त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणि विष्णुप्रीतिद्वारा शास्त्रबोधिततर्पणसाङ्गतासंसिद्ध्यर्थं मुक्तिप्राप्त्यर्थं च इमां गां/गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर गोपुच्छ/निष्क्रयद्रव्य तथा संकल्पजल ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

कलशोंके जलसे अभिषेक—दक्षिणाभिमुख, अपसव्य होकर पूर्वस्थापित किये गये प्रथम विष्णुकलशको हाथमें लेकर उसके जलसे निम्न मन्त्र पढ़ते हुए प्रथम विष्णुपिण्डपर अभिषेक करे—

विष्णुकलशे स्थितं तोयं विष्णुसूक्तेन मन्त्रितम्। तेन तोयाभिषेकेण प्रेतत्वं च निवर्तताम्॥
विष्णुलोकप्राप्तिर्भवतु।

इसी प्रकार दूसरे ब्रह्मकलशके जलसे द्वितीय ब्रह्मपिण्डपर अभिषेक करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

ब्रह्मकुम्भे स्थितं तोयं ब्रह्मसूक्तेन मन्त्रितम्। तेन तोयाभिषेकेण प्रेतत्वं च निवर्तताम्॥
ब्रह्मलोकप्राप्तिर्भवतु।

इसी प्रकार तीसरे रुद्रकलशके जलसे तृतीय रुद्रपिण्डपर अभिषेक करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

रुद्रकुम्भे स्थितं तोयं रुद्रसूक्तेन मन्त्रितम्। अभिषिञ्चामि तेन त्वां प्रेतत्वं च निवर्तताम्॥
रुद्रलोकप्राप्तिर्भवतु।

पिण्डोंका स्पर्श—कुशोंसे पिण्डोंका स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्रोंका पाठ करे—

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव॥
अतसीपुष्पसङ्काशं पीतवाससमच्युतम्। ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम्॥
कृष्ण कृष्ण कृपालो त्वमगतीनां गतिर्भव। संसारार्णवमग्नानां प्रसीद परमेश्वर॥

पिण्डाघ्राण—कुछ नम्र होकर पिण्डोंको उठाकर सूँघकर किसी पात्रमें रख दे। पिण्डाधार कुशों तथा उल्मुकको

(ख) ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं मुक्तिप्रदश्रीब्रह्मप्रीतिद्वारा अज्ञातनामगोत्राणां राजसप्रेतानां ब्रह्ममयानां अन्तरिक्षस्थानां मुक्तिप्राप्त्यर्थं इमां मोक्षधेनुं/मोक्षधेनुनिष्क्रयभूतं द्रव्यं ""गोत्राय ""शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्पजलादि ब्राह्मणको दे दे। (यदि बादमें देना हो तो दातुमुत्सृज्ये बोले।)

पुनः दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर तृतीय संकल्प करे—

(ग) ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं मुक्तिप्रदश्रीरुद्रप्रीतिद्वारा अज्ञातनामगोत्राणां तामसप्रेतानां रुद्रमयानां भूमिस्थानां मुक्तिप्राप्त्यर्थं इमां मोक्षधेनुं/मोक्षधेनुनिष्क्रयभूतं द्रव्यं ""गोत्राय ""शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्पजलादि ब्राह्मणको दे दे। (यदि बादमें देना हो तो दातुमुत्सृज्ये बोले।)

प्रार्थना—तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

त्रिलोकीनाथ देवेश सर्वभूतदयानिधे। दानेनानेन तुष्टस्त्वं प्रयच्छ गतिमुत्तमाम्॥

तिलपात्रदान—किसी ताँबेके पात्रमें तिल, स्वर्णखण्ड, दक्षिणा तथा सांगताद्रव्य रखकर त्रिकुश, अक्षत तथा जल और वह तिलपात्र दाहिने हाथमें लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं अज्ञातनामगोत्राणां सात्त्विकराजसतामसप्रेतानां विष्णुब्रह्मरुद्रमयानां दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थानां तिलपात्रदानकल्पोक्तमुक्ति-

फलप्राप्त्यर्थं साङ्गताद्रव्ययुतं इदं तिलपात्रं ससुवर्णं ""गोत्राय ""शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। (यदि बादमें देना हो तो दातुमुत्सृज्ये बोले।) कहकर संकल्पजलादि तथा तिलपात्र ब्राह्मणको दे दे।

प्रार्थना—तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च। तिलपात्रप्रदानेन तानि नश्यन्ति सर्वदा॥

घृतपात्रदान—किसी काँसेकी कटोरीमें पिघला हुआ घी रखकर तथा उसमें स्वर्णदक्षिणा छोड़कर श्राद्धकर्ता निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए उस घीमें अपने मुखकी छाया देखे (आज्यावलोकन करे)—

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि। धाम नामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥

आज्यं तेजः समुद्दिष्टमाज्यं पापहरं परम्। आज्येन देवास्तृप्यन्ति आज्ये लोकाः प्रतिष्ठिताः॥

भौमान्तरिक्षं दिव्यं वा यन्मे कल्मषमागतम्। तत्सर्वमाज्यसंस्पर्शात् प्रणाशमुपगच्छतु॥

आज्ये चैव मुखं दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।

घृतपात्रदानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा घृतपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं मम कायिकवाचिकमानसिकसमस्तपापक्षयपूर्वकश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं इदं घृतपूर्णं काँस्यपात्रं सहिरण्यं ""गोत्राय ""शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्पजलादि तथा घृतपात्र ब्राह्मणको दे दे। (यदि बादमें देना हो तो दातुमुत्सृज्ये

बोले।)

प्रार्थना—तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

यालक्ष्मीर्यच्च मे दौस्थ्यं सर्वाङ्गे समुपस्थितम्। तत्सर्वं नाशयाऽऽज्य त्वं श्रियमायुश्च वर्धय॥
कामधेनोः समुद्भूतं देवानामुत्तमं हविः। आयुर्वृद्धिकरं दातुराज्यं पातु सदैव माम्॥
आज्यपात्रप्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम॥

ब्राह्मणभोजनका संकल्प—सात्त्विक, राजस तथा तामस प्रेतोंके उद्देश्यसे किये गये श्राद्धकी प्रतिष्ठा तथा सांगतासिद्धिके लिये तीन ब्राह्मणोंको भोजन करानेकी विधि है। इसमें सात्त्विकप्रेतश्राद्धकी प्रतिष्ठाके लिये पक्वान्नका, राजसप्रेतश्राद्धकी प्रतिष्ठाके लिये पायस (खीर)-का और तामसप्रेतश्राद्धकी प्रतिष्ठाके लिये कृसरान्न (खिचड़ी)-का भोजन कराना चाहिये। यह कार्य भोजननिष्क्रयद्रव्यसे भी सम्भव है। ब्राह्मणभोजनका संकल्प यहाँ दिया जा रहा है—

दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर एकतन्त्रसे निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं अज्ञातनामगोत्राणां सात्त्विकराजसतामसप्रेतानां विष्णुब्रह्मरुद्रमयानां दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थानां अक्षयतृप्तिप्राप्तिद्वारा मुक्तिप्राप्तिकामः सात्त्विकब्राह्मणं पक्वान्नेन राजसं पायसेन तामसं कृसरान्नेन च भोजयिष्ये (यदि ब्राह्मणभोजनके रूपमें निष्क्रयद्रव्यदान करना हो तो संकल्पवाक्यमें **पक्वान्ननिष्क्रयद्रव्यभूतं द्रव्यं पायसनिष्क्रयभूतं द्रव्यं कृसरान्ननिष्क्रयभूतं**

द्रव्यं भवद्भ्यः सम्प्रददे कहना चाहिये। बादमें देना हो तो **दातुमुत्सुज्ये** बोले) **भवद्भ्यस्ताम्बूलदक्षिणादिकं च दातुं प्रतिजाने।** कहकर हाथका संकल्पजलादि छोड़ दे।

सूक्तपाठ करनेवाले ब्राह्मणोंको दक्षिणादान—सूक्तपाठ करनेवाले ब्राह्मणोंको दक्षिणा देनी चाहिये। इसके लिये हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं त्रिपिण्डीश्राद्धविहितविष्णुब्रह्मरुद्रसूक्तपाठकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं विष्णुसूक्तादिपाठकर्तृभ्यः नानानामगोत्रेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः दक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृज्ये—कहकर दक्षिणा विभक्त करके सूक्तपाठकर्ता ब्राह्मणोंको प्रदान करे।

विसर्जन—अपसव्य होकर तीनों आसनोंपर पृथक्-पृथक् क्रमशः सात्त्विक प्रेतासनपर जौ, राजस प्रेतासनपर चावल तथा तामस प्रेतासनपर तिल छोड़ते हुए निम्न मन्त्रके पाठद्वारा सात्त्विक, राजस तथा तामस प्रेतोंका विसर्जन करे—

ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः।
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥

अनुगमन—'**उत्तिष्ठन्तु सात्त्विकराजसतामसप्रेताः**' कहकर निम्न मन्त्रका पाठ करे—

ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे।
आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्॥

प्रार्थना—तदनन्तर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थाः सात्त्विका राजसास्तथा। प्रेता वै तामसा येऽन्ये शान्तिं गच्छन्तु तर्पिताः॥

आचार्यको दक्षिणादान—हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर निम्न संकल्प पढ़कर आचार्यको दक्षिणा प्रदान करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ''''गोत्रः ''''शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृतस्य त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणः साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं ''''गोत्राय ''''शर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय इमां दक्षिणां भवते सम्प्रददे। कहकर आचार्यको दक्षिणा प्रदान करे।

भूयसीदक्षिणादान—किये गये कर्ममें न्यूनातिरिक्त दोषके परिहारके लिये भूयसीदक्षिणा देनेकी शास्त्रमें विधि है। अतः इस त्रिपिण्डीश्राद्धकर्ममें जो न्यूनातिरिक्त दोष हो गया हो, उसके शमनके लिये निम्न संकल्पद्वारा भूयसीदक्षिणा प्रदान करे।

हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा दक्षिणा लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ''''गोत्रः ''''शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृतस्य त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणः साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां यथाकाले दातुमुत्सृज्ये—कहकर संकल्पजल छोड़ दे और बादमें दक्षिणा दे दे।

पितृगायत्रीका पाठ—निम्न पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

दीपनिर्वापण*—अपसव्य होकर रक्षादीप बुझा दे। हाथ-पैर धो ले। सव्य होकर आचमन कर ले और भगवान्‌की प्रार्थना करे—

प्रार्थना—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥
ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

तीर्थाधिपतिका पूजन तथा अश्वत्थवृक्षसेचन—श्राद्धके अनन्तर तीर्थाधिपतिका पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करके अपनी शक्तिके अनुसार उन्हें दक्षिणा प्रदान करे। तदनन्तर पीपलवृक्षके मूल में तिलयुक्त जलमिश्रित दूधकी धारा दे और निम्न प्रार्थना करे—

वृक्षराज नमस्तुभ्यं सर्वदेवमय प्रभो। मम देहस्य सन्तापं हर त्वं वारिधारया॥

॥ त्रिपिण्डीश्राद्धप्रयोग पूर्ण हुआ॥

---

* दीपनिर्वापणात्पुंसः कूष्माण्डच्छेदनात् स्त्रियाः। वंशहानिः प्रजायेत तस्मान्नैवं समाचरेत्॥ (अतः जल आदि अथवा किसी मिट्टीके पात्रसे ढककर दीप बुझाना चाहिये।)

त्रिपिण्डीश्राद्धमें अभिमन्त्रणके तीन सूक्त

१–विष्णुसूक्त

विष्णुसूक्तपाठके लिये वरण किये गये ब्राह्मण निम्न सूक्तका पाठ करें—

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिꣳ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ १ ॥
पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ २ ॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ ३ ॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥ ४ ॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ ५ ॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥ ६ ॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ ७ ॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ ८ ॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ ९ ॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ १०॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत॥ ११॥

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥ १२॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥ १३॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ १४॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥ १५॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ १६॥

(शु०यजु०३१। १—१६)

२–ब्रह्मसूक्त

द्वितीय ब्राह्मण निम्न ब्रह्मसूक्तका पाठ करें—

ॐ तेजोऽसि शुक्रममृतमायुष्पा आयुर्मे पाहि। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामा ददे॥ १॥
इमामगृभ्णन् रशनामृतस्य पूर्व आयुषि विदथेषु कव्या। सा नो अस्मिन्त्सुत आ बभूव ऋतस्य सामन्त्सरमारपन्ती॥ २॥
अभिधा असि भुवनमसि यन्ताऽसि धर्ता। स त्वमग्निं वैश्वानरꣳ सप्रथसं गच्छ स्वाहाकृतः॥ ३॥
स्वगा त्वा देवेभ्यः प्रजापतये ब्रह्मन्नश्वं मन्त्स्यामि देवेभ्यः प्रजापतये तेन राध्यासम्। तं बधान देवेभ्यः प्रजापतये तेन राध्नुहि॥ ४॥
प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीन्द्राग्निभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वायवे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि। यो अर्वन्तं जिघाꣳसति तमभ्यमीति वरुणः। परो मर्तः परः श्वा॥ ५॥

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा ऽपां मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा वायवे स्वाहा विष्णवे स्वाहेन्द्राय स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा॥ ६॥
हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा ऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा ऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहा ऽऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा॥ ७॥
यते स्वाहा धावते स्वाहोद्द्रावाय स्वाहोद्द्रुताय स्वाहा शूकाराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा निषण्णाय स्वाहोत्थिताय स्वाहा जवाय स्वाहा बलाय स्वाहा विवर्तमानाय स्वाहा विवृत्ताय स्वाहा विधून्वानाय स्वाहा विधूताय स्वाहा शुश्रूषमाणाय स्वाहा शृण्वते स्वाहेक्षमाणाय स्वाहेक्षिताय स्वाहा वीक्षिताय स्वाहा निमेषाय स्वाहा यदत्ति तस्मै स्वाहा यत् पिबति तस्मै स्वाहा यन्मूत्रं करोति तस्मै स्वाहा कुर्वते स्वाहा कृताय स्वाहा॥ ८॥

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ९॥
हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुप ह्वये। स चेत्ता देवता पदम्॥ १०॥
देवस्य चेततो महीं प्र सवितुर्हवामहे। सुमतिꣳ सत्यराधसम्॥ ११॥
सुष्टुतिꣳ सुमतीवृधो रातिꣳ सवितुरीमहे। प्र देवाय मतीविदे॥ १२॥
रातिꣳ सत्पतिं महे सवितारमुप ह्वये। आसवं देववीतये॥ १३॥

देवस्य सवितुर्मतिमासवं विश्वदेव्यम्। धिया भगं मनामहे॥ १४॥
अग्निꣳ स्तोमेन बोधय समिधानो अमर्त्यम्। हव्या देवेषु नो दधत्॥ १५॥
स हव्यवाडमर्त्य उशिग्दूतश्चनोहितः। अग्निर्धिया समृण्वति॥ १६॥
अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह॥ १७॥
अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना पयः। गोजीरया रꣳहमाणः पुरन्ध्या॥ १८॥
विभूर्मात्रा प्रभूः पित्राऽश्वोऽसि हयोऽस्यत्योऽसि मयोऽस्यर्वाऽसि सप्तिरसि वाज्यसि वृषाऽसि नृमणा असि। ययुर्नामाऽसि शिशुर्नामाऽस्यादित्यानां पत्वाऽन्विहि देवा आशापाला एतं देवेभ्योऽश्वं मेधाय प्रोक्षितꣳ रक्षतेह रन्तिरिह रमतामिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा॥ १९॥
काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कतमस्मै स्वाहा स्वाहाऽऽधिमाधीताय स्वाहा मनः प्रजापतये स्वाहा चित्तं विज्ञातायादित्यै स्वाहा ऽदित्यै मह्यै स्वाहा ऽदित्यै सुमृडीकायै स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा सरस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा पूष्णे नरन्धिपाय स्वाहा त्वष्ट्रे स्वाहा त्वष्ट्रे तुरीपाय स्वाहा त्वष्ट्रे पुरुरूपाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा विष्णवे निभूयपाय स्वाहा विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा॥ २०॥
विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम्। विश्वो राय इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा॥ २१॥
आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ २२॥

प्राणाय स्वाहा ऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥ २३॥
प्राच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा
प्रतीच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे
स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा॥ २४॥
अद्भ्यः स्वाहा वार्भ्यः स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा स्त्रवन्तीभ्यः स्वाहा स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा कूप्याभ्यः
स्वाहा सूद्याभ्यः स्वाहा धार्याभ्यः स्वाहा ऽर्णवाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा॥ २५॥
वाताय स्वाहा धूमाय स्वाहा ऽभ्राय स्वाहा मेघाय स्वाहा विद्योतमानाय स्वाहा स्तनयते स्वाहा ऽवस्फूर्जते
स्वाहा वर्षते स्वाहा ऽववर्षते स्वाहोग्रं वर्षते स्वाहा शीघ्रं वर्षते स्वाहोद्गृह्णते स्वाहोद्गृहीताय स्वाहा
प्रुष्णते स्वाहा शीकायते स्वाहा प्रुष्वाभ्यः स्वाहा ह्रादुनीभ्यः स्वाहा नीहाराय स्वाहा॥ २६॥
अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहेन्द्राय स्वाहा पृथिव्यै स्वाहा ऽन्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा
दिग्भ्यः स्वाहा ऽऽशाभ्यः स्वाहोर्व्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा॥ २७॥
नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा ऽहोरात्रेभ्यः स्वाहा ऽर्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहा ऋतुभ्यः
स्वाहा ऽऽर्तवेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याꣳ स्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा
वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहा ऽऽदित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूलेभ्यः स्वाहा
शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा॥ २८

पृथिव्यै स्वाहा ऽन्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा ऽद्भ्यः
स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा परिप्लवेभ्यः स्वाहा चराचरेभ्यः स्वाहा सरीसृपेभ्यः स्वाहा॥ २९
असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहा ऽभिभुवे स्वाहा
ऽधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सꣳसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा॥ ३०
मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहेषाय स्वाहोर्जाय
स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहा ऽꣳहसस्पतये स्वाहा॥ ३१
वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहा ऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा स्वः स्वाहा मूर्ध्ने स्वाहा व्यश्नुविने स्वाहा ऽन्त्याय
स्वाहा ऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहा ऽधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा॥ ३२
आयुर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा प्राणो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा ऽपानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा
व्यानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहोदानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा समानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा चक्षुर्यज्ञेन
कल्पताꣳ स्वाहा श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा वाग्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा मनो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा
ऽऽत्मा यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा ब्रह्मा श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा स्वर्यज्ञेन
कल्पताꣳ स्वाहा पृष्ठं यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा यज्ञो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा॥ ३३

एकस्मै स्वाहा द्वाभ्याꣳ स्वाहा शताय स्वाहैकशताय स्वाहा व्युष्ट्यै स्वाहा स्वर्गाय स्वाहा॥ ३४॥

(शु०यजु०अ० २

३—रुद्रसूक्त

तृतीय ब्राह्मण निम्न रुद्रसूक्तका पाठ करें—

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ १॥
या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥ २॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिᳬसीः पुरुषं जगत्॥ ३॥
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मᳬ सुमना असत्॥ ४॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव॥ ५॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनᳬ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाᳬ हेड ईमहे॥ ६॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥ ७॥
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥ ८॥
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥ ९॥
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥ १०॥
या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज॥ ११॥
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्॥ १२॥
अवतत्य धनुष्ट्वᳬ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥ १३॥

नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ १४॥
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ १५॥
मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥ १६॥
नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो नमः
शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमः॥ १७॥
नमो बभ्लुशाय व्याधिने ऽन्नानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने
क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमः॥ १८॥
नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमो
नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नम उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनां पतये नमः॥ १९॥
नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनां पतये नमो
नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः॥ २०॥
नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो
नमः सृकायिभ्यो जिघाᳬसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः॥ २१॥

नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नम इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्यो ऽस्यद्भ्यश्च वो नमः ॥ २२ ॥
नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः ॥ २३ ॥
नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्यो ऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नम आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्च वो नमः ॥ २४ ॥
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥ २५ ॥
नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षतृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः ॥ २६ ॥
नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः ॥ २७ ॥
नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥ २८ ॥
नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च ॥ २९ ॥

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च ॥ ३० ॥
नम आशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नम ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥ ३१ ॥
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च ॥ ३२ ॥
नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च ॥ ३३ ॥
नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च ॥ ३४ ॥
नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥ ३५ ॥
नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ॥ ३६ ॥
नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च ॥ ३७ ॥

नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्र्याय चातप्याय च नमो मेध्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च॥ ३८॥
नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च॥ ३९॥
नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय॥ ४०॥
नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥ ४१॥
नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च॥ ४२॥
नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किꣳशिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च॥ ४३॥
नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च॥ ४४॥
नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पाꣳसव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च॥ ४५॥

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आखिदते च प्रखिदते च नम इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानाꣳ हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः॥ ४६॥
द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित। आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ्मो च नः किंचनाममत्॥ ४७॥
इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ ४८॥
या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी। शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे॥ ४९॥
परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः। अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड॥ ५०॥
मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसान आ चर पिनाकं बिभ्रदा गहि॥ ५१॥

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्रꣳ हेतयोऽन्यमस्मन्नि वपन्तु ताः॥ ५२॥
सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि॥ ५३॥
असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ५४॥
अस्मिन् महत्यर्णवे ऽन्तरिक्षे भवा अधि। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ५५॥
नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ५६॥
नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ५७॥

ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ५८॥
ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ५९॥
ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा आयुर्युधः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ६०॥
ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ६१॥
येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ६२॥
य एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ६३॥
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः॥ ६४॥
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः॥ ६५॥
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः॥ ६६॥

(शु०यजु०अ० १६)

श्राद्धमें पाठ किये जानेवाले सूक्त

रक्षोघ्नसूक्त

कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ२ इभेन। तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः॥
तव भ्रमास आशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः। तपूꣳष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो वि सृज विष्वगुल्काः॥
प्रति स्पशो वि सृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः। यो नो दूरे अघशꣳसो यो अन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरा दधर्षीत्॥
उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ२ ओषतात्तिग्महेते। यो नो अरातिꣳ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्॥
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने। अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्र मृणीहि शत्रून्। अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि॥ (शु०यजु० १३। ९—१३)

पुरुषसूक्त

पुरुषसूक्त इसी पुस्तकमें पृ० ११४-११५ पर दिया गया है।

पितृसूक्त

उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥
अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वयꣳसुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः। तेभिर्यमः सꣳरराणो हवीꣳष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु॥

त्वꣳ सोम प्र चिकितो मनीषा त्वꣳ रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम्। तव प्रणीती पितरो न इन्दो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः॥
त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः। वन्वन्नवातः परिधीꣳ रपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवा नः॥
त्वꣳ सोम पितृभिः संविदानोऽनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ। तस्मै त इन्दो हविषा विधेम वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्॥
बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्। त आ गतावसा शन्तमेनाथा नः शं योररपो दधात॥
आऽहं पितॄन्त्सुविदत्राꣳ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः। बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः॥
उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु। त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥
आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदः सदः सदत सुप्रणीतयः। अत्ता हवीꣳषि प्रयतानि बर्हिष्यथा रयिꣳसर्ववीरं दधातन॥
ये अग्निष्वात्ता ये अनग्निष्वात्ता मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते। तेभ्यः स्वराडसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयाति॥
अग्निष्वात्तानृतुमतो हवामहे नाराशꣳसे सोमपीथं य आशुः। ते नो विप्रासः सुहवा भवन्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्॥

(शु०यजु० १९।४९—६१)

'गीताप्रेस' गोरखपुरकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

गोरखपुर-२७३००५	गीताप्रेस—पो० गीताप्रेस	✆ (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स २३३६९९७
	website:www.gitapress.org / e-mail: booksales@gitapress.org	
दिल्ली-११०००६	२६०९, नयी सड़क	✆ (०११) २३२६९६७८; फैक्स २३२५९१४०
कोलकाता-७००००७	गोबिन्दभवन-कार्यालय; १५१, महात्मा गाँधी रोड	✆ (०३३) २२६८६८९४;
	e-mail:gobindbhawan@gitapress.org	फैक्स २२६८०२५१
मुम्बई-४००००२	२८२, सामलदास गाँधी मार्ग (प्रिन्सेस स्ट्रीट)	
	मरीन लाईन्स स्टेशनके पास	✆ (०२२) २२०३०७१७
कानपुर-२०८००१	२४/५५, बिरहाना रोड	✆ (०५१२) २३५२३५१; फैक्स २३५२३५१
पटना-८००००४	अशोकराजपथ, महिला अस्पतालके सामने	✆ (०६१२) २३००३२५
राँची-८३४००१	कार्ट सराय रोड, अपर बाजार, बिड़ला गद्दीके प्रथम तलपर	✆ (०६५१) २२१०६८५
सूरत-३९५००१	वैभव एपार्टमेन्ट, नूतन निवासके सामने, भटार रोड	
	e-mail: suratdukan@gitapress.org	✆ (०२६१) २२३७३६२, २२३८०६५
[illegible]	[illegible] ५, श्रीवर्धन, ४ आर. एन. टी. मार्ग	✆ (०७३१) २५२६५१६, २५११९७७
[illegible]	[illegible] मार्केट, रेलवे स्टेशनके पास	✆ (०२५७) २२२६३९३; फैक्स २२२०३२०
[illegible]	[illegible] दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार	✆ (०४०) २४७५८३११
[illegible]	श्रीजी कृपा कॉम्प्लेक्स, ८५१, न्यू इतवारी रोड	✆ (०७१२) २७३४३५४
[illegible]	भरतिया टावर्स, बादाम बाड़ी	✆ (०६७१) २३३५४८१
रायपुर-४९२००९	मित्तल कॉम्प्लेक्स, गंजपारा, तेलघानी चौक	✆ (०७७१) ४०३४४३०
वाराणसी-२२१००१	५९/९, नीचीबाग	✆ (०५४२) २४१३५५१
हरिद्वार-२४९४०१	सब्जीमण्डी, मोतीबाजार	✆ (०१३३४) २२२६५७
ऋषिकेश-२४९३०४	गीताभवन, पो० स्वर्गाश्रम	✆ (०१३५) २४३०१२२, २४३२७९२
	e-mail:gitabhawan@gitapress.org	
कोयम्बटूर-६४१०१८	गीताप्रेस मेंशन, ८/१ एम, रसकोर्स	✆ (०४२२) ३२०२५२१
बेंगलोर-५६००२७	[illegible], फोर्थ 'इ' क्रास, के० एस० गार्डेन, लालबाग रोड	✆ (०८०) [illegible]

स्टेशन-स्टाल— दिल्ली (प्लेटफार्म नं० ५-६); नयी दिल्ली (नं० १६); हजरत निजामुद्दीन [दिल्ली] (नं० ४-५); कोटा [राजस्थान] (नं० १); बीकानेर (नं० १); गोरखपुर (नं० १); कानपुर (नं० १); लखनऊ [एन० ई० रेलवे]; वाराणसी (नं० ४-५); मुगलसराय (नं० ३-४); हरिद्वार (नं० १); पटना (मुख्य प्रवेशद्वार); राँची (नं० १); धनबाद (नं० २-३); मुजफ्फरपुर (नं० १); समस्तीपुर (नं० २); हावड़ा (नं० ५ तथा १८ दोनोंपर); कोलकाता (नं० १); सियालदा मेन (नं० ८); आसनसोल (नं० ५); कटक (नं० १); भुवनेश्वर (नं० १); अहमदाबाद (नं० २-३); राजकोट (नं० १); जामनगर (नं० १); भरुच (नं० ४-५); इन्दौर (नं० ५); वडोदरा (नं० ४-५); औरंगाबाद [महाराष्ट्र] (नं० १); सिकन्दराबाद [आं० प्र०] (नं० १); गुवाहाटी (नं० १); खड़गपुर (नं० १-२); रायपुर [छत्तीसगढ़] (नं० १); बेंगलोर (नं० १); यशवन्तपुर (नं० ६); हुबली (नं० १-२); श्री सत्यसाईं प्रशान्ति निलयम् [दक्षिण-मध्य रेलवे] (नं० १) एवं अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा, दिल्ली।

फुटकर पुस्तक-दूकानें

चूरू- ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, पुरानी सड़क, **ऋषिकेश**-मुनिकी रेती, **तिरुपति**-शॉप नं० ५६, टी०टी०डी० मिनी शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, **बेरहामपुर**-म्युनिसिपल मार्केट काम्प्लेक्स, ब्लाक-बी, शॉप नं० [illegible]—६०, प्रथम तल, **गुजरात**-[illegible] मन्दिर, [illegible]।

Code 1928